एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

एक ईसाई के तीन सवाल
और
उनके जवाब

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब
Name of book	: Ek Eesayi ke Teen Sawaal or unke Jawaab
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाईप, सैटिंग	: नईम उल हक़ कुरैशी मुरब्बी सिलसिला
Type, Setting	: Naeem Ul Haque Qureshi Murabbi Silsila
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) अगस्त 2018 ई०
Edition. Year	: 1st Edition (Hindi) August 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रीवियु आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

मई या जून 1889 ई तदनुसार 1309 हिज्री में एक ईसाई अब्दुल्लाह जेम्स ने अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर को इस्लाम के बारे में अपने तीन प्रश्न, उत्तर प्राप्त करने के उद्‌देश्य से भेजे। अंजुमन ने उत्तर के उद्‌देश्य से यह प्रश्न हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हज़रत हकीम मौलाना नूरुद्‌दीन साहिब[रज़ि०] और मौलवी गुलाम नबी साहिब अमृतसरी को भेजे।

अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम लाहौर ने इन तीनों प्रश्नों के उत्तरों को "एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब" के शीर्षक से प्रकाशित कर दिया। हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिखे हुए उत्तरों को बाद में हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी ने मक्तूबात-ए-अहमदिया जिल्द तृतीय पृष्ठ 34 से 79 में प्रकाशित किया और "तस्दीकुन्नबी" के नाम से पृथक पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित किया गया था।

यह निबंध इस से पूर्व रूहानी ख़ज़ायन में सम्मिलित नहीं था। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला की अनुमति से अब इसे वर्तमान संस्करण में सम्मिलित किया जा रहा है।

प्रकाशक

सय्यद अब्दुल हयी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहमदहू-व-नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जहाँ अन्तिम युग में इस्लाम को नए सिरे से जीवित करने और विजय के लिए उम्मत में मसीह मौऊद के अवतरित होने की ख़ुशख़बरी दी वहां मसीह मौऊद का एक बुनियादी काम

فَيَكْسِرُ الصَّلِيْبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيْرَ

(बुख़ारी किताबुल अंबिया बाब नुजूल ईसा इब्न-ए-मरयम)

अर्थात् मसीह मौऊद सलीब को तोड़ेगा और सुअर को क़त्ल करेगा भी वर्णन किया। सलीब को तोड़ने से अभिप्राय यह था कि मसीह मौऊद ईसाइयत की मिथ्या आस्थाओं के ज़ोर को तोड़ कर उनकी बजाए इस्लाम की सच्ची आस्थाओं को विजयी करेगा और सुअर सिफ़त लोगों से हर प्रकार की अपवित्रता दूर कर के उन्हें पवित्र और स्वच्छ बनाएगा। इस हदीस में जहाँ मसीह मौऊद के अवतरित होने की ख़ुशख़बरी दी गई थी वहां इसमें यह स्पष्ट संकेत भी निहित था कि अन्तिम युग में ईसाइयत को बहुत उत्थान प्राप्त होगा यहाँ तक कि वह पूरे पृथ्वी ग्रह पर छा जायेगा।

उस समय मुसलमानों की जो हालत थी उस से हर वह मुसलमान जिस के दिल में इस्लाम का दर्द था, बेचैन था। लघु प्रायद्वीप में आर्यों और ईसाइयों पादरियों और उनके प्रचारकों ने इस्लाम पर बहुत अधिक ताबड़ तोड़ आक्रमण आरंभ किए हुए थे इतने तीव्र आक्रमण थे कि

मुसलमानों के उलमा भी उस समय सहमे हुए थे और उनके पास उन आक्रमणों का कोई उत्तर नहीं था। कुछ मुसलमान तो निरुत्तर होने के कारण इस्लाम को छोड़ कर ईसाइयत की झोली में गिरते जाते थे और कुछ बिल्कुल इस्लाम से विमुख हो रहे थे। उस समय यदि ईसाइयत और अन्य धर्मों के आक्रमणों का मुकाबला करने के लिए कोई मनुष्य था तो एक ही ख़ुदा का योद्धा था अर्थात् हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम। आप ने इन धर्मों से अकेले चहुमुखी लड़ाई लड़ी।

अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम से एक ईसाई अब्दुल्लाह जेम्स ने तीन प्रश्न इस्लाम के बारे में उत्तर के लिए लिखे। उन्होंने यह प्रश्न हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब को भी भेजे। इन उत्तरों को अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम ने 1309 हिजरी में "एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब" के नाम से प्रकाशित किया (इस पुस्तक को बाद में क़ादियान से 'तस्दीकुन्नबी' के नाम से प्रकाशित किया गया जिसमें केवल हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उत्तर प्रकाशित किए गए)

अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम ने इसके प्राक्कथन में लिखा कि –

"इस्लाम धर्म के वे निष्कपट अनुयायी बन्दे जो अपनी उच्च श्रेणी की धार्मिकता, योग्यता, श्रेष्ठता, उत्तम शिष्टाचार इत्यादि ख़ूबियों के कारण आजकल की 'ज्ञान की खान' होने की दावेदार कौमों के उस्ताद थे। उन्हीं की नस्लें आज निपट मूर्ख, कलाहीन मात्र और अपने सच्चे धर्म के पवित्र सिद्धांतों के पालन से कोसों दूर हैं। उनकी मूर्खता का परिणाम यह है कि मूर्ति पूजक क़ौमें जिनके पास अपने धर्म की

सच्चाई का कोई भी बौद्धिक और पुस्तकीय तर्क नहीं खुल्लम-खुल्ला इस्लाम के खंडन के लिए खड़ी हैं और हमें अपनी ज्ञानहीनता और अयोग्यता से उनके उत्तर देने का साहस नहीं।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अत्यन्त स्पष्टता और विस्तार के साथ इन प्रश्नों के उत्तर दिए। बतौर नमूना कुछ वक्तव्य प्रस्तुत हैं –

"अब हे सत्यभिलाषियो! और सच्चे निशानों के भूखो और प्यासो!! इन्साफ से देखो और पवित्र दृष्टि से विचार करो कि जिन निशानों का ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में वर्णन किया है किस उच्च श्रेणी के निशान हैं और कैसे हर युग के लिए उपस्थित किए गए और महसूस का आदेश रखते हैं। पहले नबियों के चमत्कारों का अब नाम-व-निशान शेष नहीं केवल किस्से हैं। ख़ुदा जाने उनकी वास्तविकता कहाँ तक सही है? विशेष तौर पर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के चमत्कार जो इन्जीलों में लिखे हैं किस्से और कहानियों के रंग में होने के बावजूद और बहुत सी अतिशयोक्तियों के बावजूद जो उनमें पाए जाते हैं ऐसे सन्देह और शंकाएं उन पर आती हैं कि जिनसे उन्हें पूर्णतया पवित्र और साफ़ करके दिखलाना बहुत मुश्किल है।"

"अतः अमरीका और यूरोप आजकल एक जोश की हालत में हैं और इंजील की आस्थाओं ने जो सच्चाई के विपरीत हैं उन्हें बड़ी घबराहट में डाल दिया है यहाँ तक कि कुछ लोगों ने यह राय व्यक्त की कि मसीह[अ०] या ईसा[अ०] नामक कोई व्यक्ति वास्तव में कभी पैदा नहीं हुआ अपितु उस से सूर्य अभिप्राय है और बारह हवारियों से बारह बुर्ज अभिप्राय हैं और फिर इस ईसाई धर्म की वास्तविकता अधिकतर

इस बात से खुलती है कि जिन निशानियों को हज़रत मसीह ईमानदारों के लिए ठहरा गए थे उनमें से एक भी इन लोगों में नहीं पाई जाती। हज़रत मसीह ने फ़रमाया था कि यदि तुम मेरा अनुकरण करोगे तो प्रत्येक प्रकार की बरकत और स्वीकारिता में मेरा ही रूप बन जाओगे और चमत्कारों तथा स्वीकारिता के निशान तुम को दिए जायेंगे और तुम्हारे मोमिन होने की यही निशानी होगी कि तुम भिन्न-भिन्न प्रकार के निशान दिखला सकोगे और जो चाहोगे तुम्हारे लिए वही होगा और कोई बात तुम्हारे लिए असंभव नहीं होगी परन्तु ईसाइयों के हाथ में इन बरकतों में से कुछ भी नहीं वे उस ख़ुदा से मात्र अपरिचित हैं जो अपने विशिष्ट बन्दों की दुआएं सुनता है और उन्हें आमने सामने प्रेम और दया का उत्तर देता है और उनके लिए विचित्र से विचित्र काम कर दिखाता है।"

"अब जानना चाहिए कि प्रियतमता और मान्यता तथा सच्ची विलायत की श्रेणी जिसके संक्षिप्त तौर पर कुछ निशान वर्णन कर चुका हूँ यह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुकरण के अतिरिक्त कदापि प्राप्त नहीं हो सकता और सच्चे अनुयायी के मुकाबले पर यदि कोई ईसाई या आर्य या यहूदी स्वीकारिता के लक्षण और प्रकाश दिखाना चाहे तो यह उसके लिए कदापि संभव न होगा और नितांत शुद्ध तरीका परीक्षा का यह है कि यदि एक सदाचारी मुसलमान मुकाबले पर जो सच्चा मुसलमान और सच्चाई से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुयायी हो और कोई दूसरा व्यक्ति ईसाई इत्यादि बदले के तौर पर खड़ा हो और यह कहे कि तुझ पर आसमान से जितने निशान प्रकट होंगे या जितने परोक्ष के रहस्य तुझ

पर खुलेंगे या जो कुछ दुआओं की स्वीकारिता से तुझे सहायता दी जाएगी या जिस प्रकार से तेरे सम्मान और इज़्ज़त की अभिव्यक्ति के लिए कोई क़ुदरत का नमूना प्रकट किया जायेगा या विशेष इनामों का तुझे बतौर भविष्यवाणी वादा दिया जायेगा या यदि तेरे किसी दुष्ट विरोधी पर चेतावनी उतरने की सूचना दी जाएगी तो उन सब बातों में जो कुछ तुझ से प्रकटन में आयेगा और जो कुछ तू दिखायेगा वह मैं भी दिखाऊंगा तो ऐसा मुकाबला किसी विरोधी से कदापि संभव नहीं और कदापि मुकाबले पर नहीं आएंगे क्योंकि उनके दिल गवाही दे रहे हैं कि वे झूठे हैं उन्हें उस सच्चे ख़ुदा से कुछ भी संबंध नहीं कि जो ईमानदारों का सहायक और सच्चों का दोस्त है जैसा कि हम पहले भी कुछ वर्णन कर चुके हैं।

وھٰذا اٰخر کلامنا والحمد لِلّٰہِ اوّلًا وَّ اٰخرًا وَّ
ظاھرًا وَّ باطنًا ھو مولانا نعم المولٰی و نعم
الوکیل"

नाज़िर इशाअत

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू-व-नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ

(अलअनकबूत - 50)

कुछ दिन हुए कि एक ईसाई साहिब अब्दुल्लाह जेम्स नामक ने कुछ प्रश्न इस्लाम के बारे में उत्तर के लिए अंजुमन में प्रेषित किए थे अतः उनके उत्तर इस अंजुमन के तीन प्रतिष्ठित विद्वान सहयोगियों ने लिखें हैं जो कृतज्ञता के बाद समस्त इस पुस्तक के रूप में प्रकाशित किए जाते हैं।

प्रश्न

प्रथम – मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अपनी नुबुव्वत और पवित्र क़ुर्आन के ख़ुदा का कलाम होने पर सन्देह करने वाला होना जैसा सूरः अलबकरः और सूरः अलअनआम में दर्ज है फَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝ (अलबक़रः - 148)

इस से सिद्ध होता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने दिल में विश्वास रखते थे कि वह ख़ुदा के पैग़म्बर नहीं यदि वे ख़ुदा के पैग़म्बर होते या उन्होंने ने कभी भी कोई चमत्कार किया होता या मे'राज हुआ होता या जिब्राईल अलैहिस्सलाम पवित्र क़ुर्आन लाए होते तो वह कभी अपनी नुबुव्वत पर सन्देह करने वाले न होते इस से उनका पवित्र क़ुर्आन पर और अपनी नुबुव्वत पर सन्देह करने

वाला होना साफ़-साफ़ सिद्ध होता है और न वह अल्लाह के रसूल हैं।

द्वितीय – मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कभी भी कोई चमत्कार न मिला जैसा कि सूरः अनकबूत में दर्ज है (अनुवाद अरबी का) और कहते हैं क्यों न उतरीं उस पर कुछ निशानियाँ (अर्थ कोई एक भी क्योंकि ला नकारात्मक इस आयत में जो कि जिंसी (प्रजाति) है कुल जिंस का इन्कार करता है) उसके रब्ब से। और सूरः बनी इस्राईल में भी। और हम ने रोक दीं निशानियाँ भेजनी कि अगलों ने उनको झुठलाया। इस से साफ़-साफ़ स्पष्ट है कि ख़ुदा ने कोई चमत्कार नहीं दिया। वास्तव में अगर कोई एक चमत्कार मिलता तो वह नुबुव्वत और क़ुर्आन पर सन्देह करने वाले न होते।

तृतीय – यदि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैग़म्बर होते तो उस वक़्त के प्रश्नों के उत्तर में विवश होकर यह न कहते कि ख़ुदा को मालूम अर्थात् मुझ को मालूम नहीं और अस्हाब-ए-कहफ़ के बारे में उनकी संख्या में गलत वर्णन न करते और यह न कहते कि सूर्य दलदल के झरने में छुपता है या डूबता है हालाँकि सूर्य पृथ्वी से नौ करोड़ गुना बड़ा है वह किस प्रकार दलदल में छुप सकता है।

नोट – हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अब्दुल्लाह जेम्स के तीसरे प्रश्न को (संभवतः उसके महत्त्व को दृष्टिगत रखते हुए) दूसरा प्रश्न ठहराकर उसका उत्तर दिया है और दूसरे प्रश्न को अन्त में रखा है। जबकि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम[रज़ि॰] ने अब्दुल्लाह जेम्स के प्रश्नों के क्रम को क़ायम रखा है (प्रकाशक)

बरकतों के उतरने के स्थान रहमानी क़ुर्आन के प्रकाशों के उदय स्थल

जनाब मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब रईस क़ादियान की ओर से उत्तर

प्रथम प्रश्न का उत्तर

ऐतिराज़ कर्ता ने पहले अपने दावे के समर्थन में सूरः बकरः में से एक आयत प्रस्तुत की है जिसके पूरे-पूरे शब्द ये हैं

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝

(अलबक़रः - 148)

इस आयत का पिछला अगला प्रसंग अर्थात् अगली पिछली आयतों के देखने से साफ़ प्रकट होता है कि यहाँ नुबुव्वत और पवित्र क़ुर्आन का कोई ज़िक्र नहीं। केवल इस बात का वर्णन है कि बैतुल मक़दस की ओर नहीं अपितु बैत-ए-का'बा की ओर मुंह फेर कर नमाज़ पढ़नी चाहिए। अतः अल्लाह तआला इस आयत में फ़रमाता है कि यह ही सच बात है अर्थात् खाना का'बा की ओर ही नमाज़ पढ़ना सच है जो प्रारंभ से निर्धारित हो चुका है और पहली किताबों में बतौर भविष्यवाणी इसका वर्णन भी है अतः तू (हे पढ़ने वाले! इस किताब के) इस बारे में सन्देह करने वालों में से मत हो★ फिर इस

★**हाशिया :-** यह इस बात की ओर संकेत है कि पहली किताबों में तथा इंजील में भी का'बे की तरफ़ मुंह फेरने के बारे में बतौर भविष्यवाणी संकेत हो चुके हैं। देखो युहन्ना अध्याय 4 आयत 21-24 यसू ने उस से कहा कि हे औरत! मेरी

आयत के आगे भी इसी विषय के बारे में आयतें हैं अतः फ़रमाता है

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ؕ (अलबक़र: - 150)

अर्थात् प्रत्येक ओर से जो तू निकले तो खाना का'बा की ही ओर नमाज़ पढ़ यही तेरे रब्ब की ओर से सच है अतः साफ़ प्रकट है कि यह समस्त आयतें खाना का'बा के बारे में हैं न कि किसी अन्य ज़िक्र के संबंध में और चूंकि यह आदेश जो खाना का'बा की ओर नमाज़ पढ़ने के लिए जारी हुआ एक सामान्य आदेश है जिसमें सब मुसलमान सम्मिलित हैं इसलिए अब आदेश का सामान्य उद्देश्य कुछ भ्रम वाले स्वभावों का भ्रम दूर करने के लिए इन आयतों ने उन को सांत्वना दी गई कि इस बात से दुविधा में न हों कि पहले बैतुल मुक़द्दस की ओर नमाज़ पढ़ते-पढ़ते अब उस ओर से हटकर खाना का'बा की ओर नमाज़ पढ़ना क्यों आरंभ कर दिया तो फ़रमाया कि यह कोई नई बात नहीं अपितु यह वही निर्धारित बात है जिसको ख़ुदा तआला ने अपने पहले नबियों के द्वारा पहले ही से बता रखा था इसमें सन्देह मत करो।

दूसरी आयत में जो ऐतिराज़ कर्ता ने दावे के समर्थन में स्वयं लिखा है वह सूरः अल अनआम की एक आयत है जो अपनी सम्बन्धित आयतों सहित इस प्रकार से है

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ

बात को विश्वास रख वह घड़ी आती है कि जिसमें तुम न इस पहाड़ पर और न यरोशलम में बाप की इबादत करोगे।

مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَاتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝

(अलअनआम - 115)

अर्थात् क्या ख़ुदा तआला के अतिरिक्त मैं कोई और हकम मांगू और वह वही है जिसने तुम पर विस्तृत किताब उतारी और जिन लोगों को हम ने किताब अर्थात् क़ुर्आन दिया है अभिप्राय यह है कि जिनको हम ने क़ुर्आन का ज्ञान समझाया है वह खूब जानते हैं कि वह अल्लाह तआला की ओर से है अत: हे पढ़ने वाले! तू सन्देह करने वालों में से मत हो।

अब इन आयतों पर दृष्टि डालने से स्पष्ट मालूम होता है कि सम्बोधित इस आयत के जो فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ है ऐसे लोग हैं जो अभी विश्वास और ईमान और ज्ञान से कम हिस्सा रखते हैं अपितु उपरोक्त आयतों से यह भी खुलता है कि यहाँ यह आदेश आया فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ का पैग़म्बर-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है जिसका पवित्र क़ुर्आन में वर्णन किया गया है क्योंकि प्रारंभिक आयत में जिस से यह आयत सम्बन्ध रखती है आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ही कथन है अर्थात् यह कि اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِىْ حَكَمًا अर्थात् इन समस्त आयतों का बामुहावरा अनुवाद यह है कि मैं ख़ुदा तआला के अतिरिक्त कोई अन्य हकम जो मुझ में और तुम में फैसला करे निर्धारित नहीं कर सकता वह वही है जिसने तुम पर विस्तृत किताब उतारी तो जिन को इस किताब का ज्ञान दिया गया है वे उसका अल्लाह तआला की ओर से होना भली-भांति जानते हैं अत: तू (हे अनजान आदमी!) सन्देह करने वालों में से मत हो।

अब अनुसन्धान से स्पष्ट है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं सन्देह नहीं करते अपितु सन्देह करने वालों को गवाहों और तर्कों के हवाले से मना करते हैं अतः ऐसे खुले-खुले वर्णन के बावजूद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर रसूल होने के बारे में सन्देह को सम्बद्ध करना अनभिज्ञता, ज्ञानहीनता या मात्र पक्षपात नहीं तो क्या है?

फिर यदि किसी हृदय में यह विचार पैदा हो कि यदि सन्देह करने से कुछ ऐसे नव मुस्लिम या चिंतित मना किए गये थे जो कमज़ोर ईमान थे तो उनको यों कहना चाहिए था कि तुम सन्देह मत करो न यह कि तू सन्देह मत कर क्योंकि कमज़ोर ईमान व्यक्ति केवल एक ही नहीं होता अपितु कई होते हैं बहुवचन के बजाए एकवचन सम्बोधन की विभक्ति क्यों प्रयोग की गई। इसका उत्तर यह है कि इस एकवचन से एकवचन जिंसी (प्रजाति) अभिप्राय है जो जमाअत का आदेश रखता है अगर तुम शुरू से अन्त तक पवित्र क़ुर्आन को पढ़ो तो उसमें यह सामान्य मुहावरा पाओगे कि वह अधिकतर स्थानों में जमाअत को एक सदस्य के रूप में सम्बोधित करता है। उदाहरणतया नमूने के तौर पर इन आयतों को देखो

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ۝
وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝

(बनी इस्राईल - 23 से 25)

अर्थात् ख़ुदा तआला के साथ कोई दूसरा ख़ुदा मत ठहरा यदि तूने ऐसा किया तो निन्दित और अपमानित होकर बैठेगा और तेरे ख़ुदा ने यही चाहा है कि तुम उसी की बंदगी करो उसके अतिरिक्त कोई और दूसरा तुम्हारा मा'बूद (उपास्य) न हो और माता-पिता से उपकार कर वह दोनों या एक उनमें से तेरे सामने बड़ी आयु तक पहुँच जाएँ तो तू उनको उफ़ न कर और न उनको झिड़क अपितु उन से ऐसी बातें कह कि जिनमें उनकी बुज़ुर्गी और श्रेष्ठता पाई जाए तह विनय और दया से उनके सामने अपना बाज़ू झुका और दुआ कर कि हे मेरे रब्ब! तू उन पर दया कर जैसा उन्होंने मेरे बचपन के समय में मेरा पोषण किया।

अब देखो कि इन आयतों में यह हिदायत स्पष्ट है कि यह एकवचन का संबोधन जमाअत उम्मत की ओर है जिनको कभी इन्हीं आयतों में तुम कर के भी पुकारा गया है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन आयतों में संबोधित नहीं क्योंकि इन आयतों में माता-पिता के आदर और सम्मान तथा उनके बारे में नेकी और उपकार का आदेश है और स्पष्ट है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के माता-पिता तो छोटी आयु के युग में अपितु आप के दूध पीने के समय में ही गुज़र चुके थे अतः इस जगह से और ऐसे अन्य स्थानों से स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि जमाअत को एकवचन के तौर पर समबोधित कर के पुकारना यह पवित्र क़ुर्आन का एक आम मुहावरा है कि जो प्रारंभ से अन्त तक जगह-जगह सिद्ध होता चला जाता है। यही मुहावरा तौरात के आदेशों में भी पाया जाता है कि एकवचन सम्बोधित के शब्द से आदेश जारी किया जाता है और

अभिप्राय बनी इस्राईल की जमाअत होती है जैसा कि ख़ुरूज अध्याय 33-34 प्रत्यक्ष में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को सम्बोधित कर के फ़रमाया है कि। (11) आज के दिन में जो आदेश तुझे करता हूँ तू उसे याद रखियो। (12) होशियार रह ताकि न होवे कि उस ज़मीन के निवासियों के साथ जिसमें तू जाता है कुछ समझौते बांधे। (17) तू अपने लिए ढ़ाले हुए उपास्यों को मत बनाइयो।

अब इन आयतों का अगला पिछला प्रसंग देखने से साफ़ प्रकट है कि यद्यपि इन आयतों में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम सम्बोधित किए गए थे परन्तु वास्तव में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को इन आदेशों का निशाना नहीं बनाया गया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम न किनआन मव गए और न मूर्ति पूजा जैसा बुरा काम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जैसे मर्द-ए-ख़ुदा मूर्ति तोड़ने वाले से हो सकता था जिस से उनको मना किया जाता क्योंकि मूसा अलैहिस्सलाम को वह अल्लाह का सानिध्य प्राप्त है जिसकी शान में इसी अध्याय में ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि "तू मेरी नज़र में स्वीकार है और मैं तुझको नाम के साथ पहचानता हूँ"

(देखो ख़ुरूज अध्याय 33 आयत 17।)

अत: याद रखना चाहिए कि यही शैली पवित्र क़ुर्आन की है तौरात और पवित्र क़ुर्आन में प्राय: आदेश इसी रूप से हैं कि जैसे उनके संबोधित हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं परन्तु वास्तव में वह संबोधन क़ौम और उम्मत के लोगों की ओर होता है किन्तु जिसको इन किताबों के लिखने की शैली मालूम नहीं वह अपनी अनभिज्ञता से यही समझ

लेता है कि जैसे वह संबोधन और उताब (क्रोध) उस नबी को हो रहा है जिस पर वह कलाम उतरा है परन्तु विचार करने और क्रमों पर दृष्टि डालने से उस पर खुल जाता है कि यह सर्वथा ग़लती है।

फिर यह ऐतिराज़ उन आयतों पर नज़र डालने से भी पूर्णतया समूल विनष्ट होता है जिनमें अल्लाह तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पूर्ण विश्वास की प्रशंसा की है जैसा कि वह एक स्थान पर फ़रमाता है

(अलअनआम - 58) قُلْ اِنِّیْ عَلٰی بَیِّنَۃٍ مِّنْ رَّبِّیْ

अर्थात् कह कि मुझे अपनी रिसालत पर खुला-खुला तर्क अपने रब्ब की ओर से मिला है और फिर दूसरे स्थान पर फ़रमाता है कि

(यूसुफ़ - 109) قُلْ هٰذِهٖ سَبِیْلِیْۤ اَدْعُوْۤا اِلَی اللّٰهِ عَلٰی بَصِیْرَۃٍ

अर्थात् कह कि यह मेरा मार्ग है मैं अल्लाह की ओर पूर्ण विवेक के साथ बुलाता हूँ और फिर एक स्थान पर फ़रमाता है कि

وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَیْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَیْكَ عَظِیْمًا ○

(अन्निसा - 114)

अर्थात् ख़ुदा ने तुझ पर किताब उतारी और हिकमत अर्थात् किताब की सच्चाई के तर्क तुझ पर प्रकट किए गए और तुझे वह ज्ञान सिखाये जिन्हें तू स्वयं नहीं जान सकता था और तुझ पर उसकी एक महान कृपा है फिर सूर: नज्म में फ़रमाता है कि

(अन्नज्म - 12) مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰی ○

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰی ○ لَقَدْ رَاٰی مِنْ اٰیٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰی ○

(अन्नज्म - 18,19)

अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल ने जो अपनी सच्चाई के आकाशीय निशान देखे तो उसको कुछ झुठलाया नहीं अर्थात् सन्देह नहीं किया और आँख दायें-बाएँ नहीं फेरी और न सीमा से आगे बढ़ी अर्थात् सच पर ठहर गई और उसने अपने ख़ुदा के वे निशान देखे जो अत्यन्त महान थे।

अब हे दर्शको! थोड़ा इन्साफ़ से देखो हे सत्य प्रिय लोगो! तनिक न्याय की दृष्टि से विचार करो कि ख़ुदा तआला कैसे साफ़-साफ़ तौर पर शुभ सन्देश देता है क्या आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पूर्ण विवेक के साथ अपनी नुबुव्वत पर विश्वास था और उनको महान निशान दिखलाये गए थे।

अब खुलासा उत्तर यह है कि सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन में एक नुक्तः या एक शोशा इस बात को बताने वाला नहीं पाओगे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपनी नुबुव्वत या पवित्र क़ुर्आन के ख़ुदा की ओर से होने के बारे में कुछ सन्देह था अपितु निश्चित और अटल बात है कि जितना पूर्ण विश्वास और पूर्ण विवेक और पूर्ण आत्मज्ञान का आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने बरकत वाले अस्तित्व के बारे में दावा किया है और फिर उसका सुबूत दिया है ऐसा कामिल सुबूत किसी अन्य मौजूद किताब में कदापि नहीं पाया जाता। فَهَلْ مَنْ يَّسْمَعُ فَيُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَيَكُوْنُ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ الْمُخْلِصِيْنَ स्पष्ट रहे कि इन्जीलों★ में हज़रत मसीह के कुछ कथन ऐसे वर्णन

★**हाशिया :-** यह सन्देह चारों इन्जीलों से पैदा होते हैं विशेष तौर पर इंजील मती तो प्रथम श्रेणी के सन्देह पैदा करने में है।

किए गए हैं जिन पर विचार करने से मालूम होता है कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अपनी आयु के अन्तिम दिनों में अपनी नुबुव्वत और अपने ख़ुदा से समर्पित होने के बारे में कुछ संदेहों में पड़ गए थे जैसा कि यह वाक्य कि जैसे अन्तिम समय का वाक्य था अर्थात् ईली-ईली लिमा सबकतनी जिसके मायने यह हैं कि हे मेरे ख़ुदा! हे मेरे ख़ुदा! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया दुनिया से बिलकुल रुखसत होने के समय में जो ख़ुदा के वालियों के विश्वास और ईमान के प्रकाश प्रकट होने का समय होता है आंजनाब के मुंह से निकल गया। फिर आपका यह भी तरीका था कि दुश्मनों के बुरे इरादों का अहसास कर के उस स्थान से भाग जाया करते थे हालाँकि ख़ुदा तआला से सुरक्षित रहने का वादा पा चुके थे इन दोनों बातों से सन्देह और हैरानी प्रकट है फिर आपका पूरी रात रो-रो कर ऐसे मामले के लिए जिसका बुरा अंजाम आपको पहले से मालूम था इसके अतिरिक्त क्या मायने रखता है कि प्रत्येक बात में आपको सन्देह ही सन्देह था। ये बातें केवल ईसाइयों के उस ऐतिराज़ उठाने के उद्देश्य से लिखी गई हैं अन्यथा इन प्रश्नों का उत्तर हम तो उत्तम ढंग से दे सकते हैं और अपने प्यारे मसीह के सर से जो मानवीय अशक्तताओं और कमजोरियों से अपवाद नहीं थे इन समस्त आरोपों को केवल एक मा'बूद और बेटा होने के इन्कार से एक पल में उठा सकते हैं परन्तु हमारे ईसाई भाइयों को बहुत कठिनाई का सामना होगा।

दूसरे प्रश्न का उत्तर

गुप्त न रहे कि इन दोनों आयतों से ऐतिराज़ करने वाले का उद्देश्य चमत्कारों के न होने पर तर्क है कदापि सिद्ध नहीं होता अपितु

इसके विपरीत यह सिद्ध होता है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अवश्य ऐसे चमत्कार प्रकट होते रहे हैं जो एक सत्यनिष्ठ और कामिल नबी से होने चाहिए।अतः इसकी व्याख्या नीचे के वर्णनों से भली-भांति हो जाएगी।

पहली आयत जिसका अनुवाद ऐतिराज़ करने वाले ने अपने दावे के समर्थन के लिए संबंधित इबारतों से काट कर प्रस्तुत कर दिया है उसके साथ की दूसरी आयतों के साथ जिनसे मतलब खुलता है यह है –

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝

(अलअनकबूत - 51,52)

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝

(अलअनकबूत - 54)

अर्थात् कहते हैं कि क्यों न उतरीं उस पर निशानियाँ कि वे निशानियाँ (जो तुम मांगते हो अर्थात् अज़ाब की निशानियाँ) वे तो ख़ुदा तआला के पास और उसके विशेष अधिकार में हैं और मैं तो केवल डराने वाला हूँ। अर्थात् मेरा काम केवल यह है कि अज़ाब के दिन से डराऊं न यह कि अपनी ओर से अज़ाब उतारूँ और फिर फ़रमाया कि क्या इन लोगों के लिए (जो स्वयं पर कोई अज़ाब की निशानी लाना चाहते हैं।) यह रहमत की निशानी पर्याप्त नहीं जो हम

ने तुझ पर (हे उम्मी रसूल!) वह किताब (जो खूबियों की संग्रहीता है।) उतारी जो उन पर पढ़ी जाती है अर्थात् पवित्र क़ुर्आन जो एक दया का निशान है जिस से वास्तव में वही मतलब निकलता है जो काफ़िर लोग अज़ाब के निशानों से पूरा करना चाहते हैं क्योंकि मक्का के काफ़िर इस उदेश्य से अज़ाब का निशान मांगते थे ताकि वह उन पर आकर उन्हें अटल विश्वास तक पहुंचा दे। केवल देखने की चीज़ न रहे क्योंकि केवल अकेले देखने के निशानों में उनको धोखे की सम्भावना थी और आँख बंद होने का विचार अतः इस भ्रम और व्याकुलता के दूर करने के लिए फ़रमाया कि ऐसा ही निशान चाहते हो जो तुम्हारे अस्तित्वों पर आ जाए तो फिर अज़ाब के निशान की क्या आवश्यकता है? इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए दया का निशान पर्याप्त नहीं? अर्थात् पवित्र क़ुर्आन जो तुम्हारी आँखों को अपनी प्रकाश से भरपूर और तीव्र किरणों से चुंधिया रहा है और अपने व्यक्तिगत खूबियाँ और अपनी वास्तविकताओं और अध्यात्म ज्ञानों तथा अपनी विलक्षण विशेषताओं को इतना दिखा रहा है जिसके मुकाबले और वाद-विवाद से तुम असमर्थ रह गए हो और तुम पर और तुम्हारी क़ौम पर एक विलक्षण प्रभाव डाल रहा है★ और दिलों पर आकर विचित्र से विचित्र परिवर्तन दिखला रहा है। लम्बे समय

★हाशिया :- यह पवित्र क़ुर्आन की समस्त विलक्षण विशेषताएं जिनके अनुसार वह चमत्कार कहलाता है इन निम्नलिखित सूरतों में नीचे विवरण के साथ कहते हैं कि सूरः अलबक़रः, सूरः आलेइमरान, सूरः अन्निसा, सूरः अलमाइदः, सूरः अलअनआम, सूरः अलआराफ़, सूरः अलअन्फाल, सूरः अत्तौबः, सूरः यूनुस, सूरः हूद, सूरः अर्रअद, सूरः इब्राहीम, सूरः अलहिज्र, सूरः अलवाकिअः, सूरः अन्नम्ल, सूरः अलहज, सूरः अल बय्यिनः, सूरः अलमुजादलः की बतौर नमूना

के मुर्दे उससे जिंदा होते चले जाते हैं और जन्मजात अंधे जो असंख्य पीढ़ियों से अंधे ही चले आते थे आँखें खोल रहे हैं और कुफ्र तथा नास्तिकता के भिन्न-भिन्न प्रकार के रोग इस से अच्छे होते चले जाते हैं। और पक्षपात के भयंकर कोढ़ी इस से साफ़ होते जाते हैं इस से प्रकाश मिलता है और अंधकार दूर होता है और ख़ुदा का मिलन प्राप्त होता है और उसकी निशानियाँ पैदा होती हैं। अतः तुम क्यों उस दया के निशान को छोड़कर जो हमेशा का जीवन प्रदान करता

शेष हाशिया - कुछ आयतें ये हैं अल्लाह तआला फ़रमाता है कि –

يَّهۡدِیۡ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضۡوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ وَ یُخۡرِجُهُمۡ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوۡرِ (अलमाईद: - 17)

شِفَآءٌ لِّمَا فِی الصُّدُوۡرِ (यूनुस - 58)

اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحۡیَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا (अन्नहल - 66)

اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتۡ اَوۡدِیَةٌۢ بِقَدَرِهَا (अर्रअद - 18)

اَنۡزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَتُصۡبِحُ الۡاَرۡضُ مُخۡضَرَّةً (अलहज्ज - 64)

تَقۡشَعِرُّ مِنۡهُ جُلُوۡدُ الَّذِیۡنَ یَخۡشَوۡنَ رَبَّهُمۡ ۚ ثُمَّ تَلِیۡنُ جُلُوۡدُهُمۡ وَ قُلُوۡبُهُمۡ اِلٰی ذِکۡرِ اللّٰهِ (अज़्ज़ुमर - 24)

اَلَا بِذِکۡرِ اللّٰهِ تَطۡمَئِنُّ الۡقُلُوۡبُ ۝ (अर्रअद - 29)

اُولٰٓئِكَ کَتَبَ فِیۡ قُلُوۡبِهِمُ الۡاِیۡمَانَ وَ اَیَّدَهُمۡ بِرُوۡحٍ مِّنۡهُ (अलमुजादल: - 23)

قُلۡ نَزَّلَهٗ رُوۡحُ الۡقُدُسِ مِنۡ رَّبِّكَ بِالۡحَقِّ لِیُثَبِّتَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ هُدًی وَّ بُشۡرٰی لِلۡمُسۡلِمِیۡنَ ۝ (अन्नहल - 103)

اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ ۝ (अलहिज्र - 10)

فِیۡهَا کُتُبٌ قَیِّمَةٌ ۝ (अलबय्यिन: - 4)

है अज़ाब और मौत का निशान मांगते हो? फिर इसके बाद फ़रमाया की यह क़ौम तो जल्दी से अज़ाब ही मांगती है। दया के निशानों से लाभ उठाना नहीं चाहती। उनको कह दे कि यदि यह बात न होती कि अज़ाब की निशानियाँ समय से सम्बद्ध होती हैं तो यह अज़ाब की निशानियाँ भी कब की उतर गई होतीं और अज़ाब अवश्य आयेगा और ऐसे समय में आयेगा कि उनको ख़बर भी नहीं होगी।

अब इंसाफ से देखो! कि इस आयत में चमत्कारों का कहाँ

قُلۡ لَّئِنِ اجۡتَمَعَتِ الۡاِنۡسُ وَ الۡجِنُّ عَلٰۤی اَنۡ یَّاۡتُوۡا بِمِثۡلِ ہٰذَا الۡقُرۡاٰنِ لَا یَاۡتُوۡنَ بِمِثۡلِہٖ وَ لَوۡ کَانَ بَعۡضُہُمۡ لِبَعۡضٍ ظَہِیۡرًا ۝ (बनी इस्राईल - 89)

अर्थात् क़ुर्आन के द्वारा सलामती के मार्गों की हिदायत मिलती है और लोग अन्धकार से प्रकाश की ओर निकाले जाते हैं वह प्रत्येक आन्तरिक रोग को अच्छा करता है। ख़ुदा ने एक ऐसा पानी उतारा है जिस से मुर्दा ज़मीन जिंदा हो रही है ऐसा पानी उतारा जिस से प्रत्येक घाटी में अपनी विशालता के अनुसार बह निकला है। ऐसा पानी उतारा जिस से गली सड़ी हुई ज़मीन हरी हो गई इस से ख़ुदा के भय से बन्दों की खालें कांपती हैं। फिर उनकी खालें और उनके दिल ख़ुदा के ज़िक्र के लिए नर्म हो जाते हैं। याद रखो कि क़ुर्आन से दिल संतोष पकड़ते हैं जो लोग क़ुर्आन के अनुयायी हो जाएँ उनके दिलों में ईमान लिखा जाता है और उन्हें रूहुलक़ुदुस मिलता है। रूहुलक़ुदुस ने ही क़ुर्आन को उतारा ताकि क़ुर्आन ईमानदारों के दिलों को सुदृढ़ करे और मुसलमानों के लिए मार्ग दर्शन और ख़ुशख़बरी का निशान हो। हमने ही क़ुर्आन को उतारा है और हम ही उसकी सुरक्षा करने वाले हैं। क्या सूरत की दृष्टि से और क्या विशेषता की दृष्टि से क़ुर्आन हमेशा अपनी वास्तविक हालत पर रहेगा और ख़ुदा की सुरक्षा का उस पर साया होगा। फिर फ़रमाया कि क़ुर्आन में समस्त अध्यात्म ज्ञान, हकीक़तें और सच्चाईयां हैं जो ख़ुदाई किताबों में पाई जाती हैं और उसका सदृश बनाने पर कोई मनुष्य और जिन्न सामर्थ्यवान नहीं यद्यपि इस काम के लिए परस्पर सहायक और सहयोगी हो जाएँ।

इन्कार पाया जाता है। ये आयतें तो बुलन्द आवाज़ में पुकार रही हैं कि काफ़िरों ने मौत और अज़ाब का निशान माँगा था अतः प्रथम उन्हें कहा गया कि देखो तम्हें जीवनदायिनी निशान मौजूद है अर्थात् क़ुर्आन जो तुम पर आकर तुम्हें मारना नहीं चाहता अपितु हमेशा का जीवन प्रदान करता है परन्तु जब अज़ाब का निशान तुम पर आया तो वह तुम्हें मार देगा। तो क्यों तुम अकारण अपना मरना ही चाहते हो और यदि तुम अज़ाब ही मांगते हो तो याद रखो कि वह भी जल्द आयेगा। अतः अल्लाह तआला ने आयतों में अज़ाब का वादा दिया है और पवित्र क़ुर्आन में जो दया के निशान हैं और दिलों पर आकर अपना विलक्षण प्रभाव उन पर प्रकट करते हैं उनकी ओर ध्यान दिलाया परन्तु ऐतिराज़ कर्ता का यह गुमान कि इस आयत में **ला नाफ़िअः** चमत्कारों की प्रजाति की नफ़ी को बताता है। जिस से समस्त चमत्कारों की नफ़ी अनिवार्य आती है। केवल सर्फ़-व-नहव (व्याकरण) से अपरिचित होने के कारण है। याद रखना चाहिए कि नफ़ी का प्रभाव उसी सीमा तक सीमित होता है जो कलाम करने वाले के इरादे में निर्धारित होता है। चाहे वह इरादा स्पष्ट तौर पर वर्णन किया गया हो या संकेत के तौर पर। उदाहरणतया कोई कहे कि अब सर्दी का नाम-व-निशान शेष नहीं रहा तो स्पष्ट है कि उसने अपने शहर की वर्तमान हालत के अनुसार कहा है और यद्यपि उस ने प्रत्यक्ष तौर पर अपने शहर का नाम भी नहीं लिया परन्तु उस के कलाम से यह समझना कि उसका यह दावा है कि समस्त पर्वतीय देशों से भी सर्दी जाती रही और हर स्थान पर सख़्त और तीव्र धूप पड़ने लगीऔर उसका तर्क यह प्रस्तुत करना कि जिस **ला** को उसने

इस्तेमाल किया है वह प्रजाति की नफ़ी का **ला** है जिसका प्रभाव समस्त संसार पर पड़ना चाहिए सही नहीं। मक्का के पराजित मूर्ति पूजक जिन्होंने अन्त में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत और आंजनाब के चमत्कारों को चमत्कार कर के मान लिया तथा जो कुफ्र के युग में भी केवल ख़ुश्क इनकारी नहीं थे अपितु रोम और ईरान में भी जाकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को **आश्चर्यजनक** विचार से जादूगर प्रसिद्ध करते थे और यद्यपि अनुचित शैलियों में ही सही परन्तु निशानों का इक़रार कर लिया करते थे जिनके इक़रार पवित्र क़ुर्आन में मौजूद हैं वे अपने कमज़ोर कलाम में जो मुहम्मदी नुबुव्वत के चमकदार प्रकाशों के नीचे दबे हुए थे क्यों **ला** नफ़ी (निषेध) का इस्तेमाल करने लगे। अगर उनको ऐसा ही लम्बा छोड़ा इन्कार होता तो वे अन्ततः अत्यन्त श्रेणी के विश्वास से जो उन्होंने अपने रक्तों के बहाने और अपनी जानों के न्योछावर करने से सिद्ध कर दिया था इस्लाम से सम्मानित क्यों हो जाते थे? और कुफ्र के दिनों में उनके वाक्य पवित्र क़ुर्आन में बार-बार दर्ज हैं वह यही है कि वे अपनी अनुदारता के धोखे से सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम **जादूगर** रखते थे जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है

وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝

(अलक़मर - 3)

अर्थात् जब कोई निशान देखते हैं तो मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह पक्का जादू है फिर दूसरे स्थान पर फ़रमाता है

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ۫ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝

(साद - 5)

अर्थात् उन्होंने इस बात से आश्चर्य किया कि उन्हीं में से एक व्यक्ति उनकी ओर भेजा गया और बेईमानों ने कहा कि यह तो जादूगर झूठा है। अब स्पष्ट है कि जब वे निशानों को देख कर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जादूगर कहते थे और फिर इसके बाद उन्हें उन्हीं निशानों को चमत्कार कर के मान भी लिया और प्रायद्वीप का प्रायद्वीप मुसलमान हो कर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पवित्र चमत्कारों का हमेशा के लिए सच्चे दिल से गवाह बन गया तो फिर ऐसे लोगों से क्योंकर संभव है कि वे सामान्य तौर पर निशानों से साफ़ इनकारी हो जाते और चमत्कारों के इन्कार में **ला** निषेध इस्तेमाल करते जो उनके हौसले की सीमा से बाहर और उनकी निरंतर राय से दूर था अपितु प्रसंगों से सूर्य के समान स्पष्ट है कि जिस-जिस स्थान पर पवित्र क़ुर्आन ने कफ़िरों की ओर से यह ऐतिराज़ लिखा गया है कि क्यों इस पैग़म्बर पर कोई निशानी नहीं उतरी? साथ ही यह भी बतला दिया गया है कि उनका मतलब यह है कि जो निशानियाँ हम मांगते हैं उनमें से कोई निशानी क्यों नहीं उतरती।★

अब संक्षिप्त किस्सा यह कि आप ने उपरोक्त आयत के **ला**

★**हाशिया :-** स्पष्ट हो कि पवित्र क़ुर्आन में निशान मांगने के प्रश्न काफ़िरों की ओर से केवल एक दो जगह नहीं बल्कि कई स्थानों पर यही सवाल किया गया है और उन सब स्थानों को इकट्ठी नज़र से देखने से सिद्ध होता है कि मक्का के काफ़िर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तीन प्रकार के निशान माँगा करते थे।

(1) वे निशान जो अज़ाब के रूप में अपनी जिज्ञासा से मक्का के काफ़िरों ने मांगे थे।

(2) दूसरे वे निशान जो अज़ाब के रूप में या अज़ाब की भूमिका के

निषेध को प्रस्न्दों की सीमा से अधिक खींच दिया है ऐसा **ला** निषेध अरबों के कभी स्वप्न में भी नहीं आया होगा। उनके दिल तो इस्लाम

शेष हाशिया - रूप में पहली उम्मतों पर लाए गए थे।

(3) तीसरे वे निशान जिस से ग़ैब (परोक्ष) का पर्दा पूर्णतया उठ जाए जिसका उठ जाना परोक्ष पर ईमान लाने के पूर्णतया विपरीत है। अत: अज़ाब के निशान प्रकट होने के लिए जो प्रश्न किए गए हैं उनका उत्तर तो पवित्र क़ुर्आन में यही दिया गया है कि तुम प्रतीक्षक रहो अज़ाब उतरेगा हाँ ऐसे रूप का अज़ाब उतारने से इन्कार किया गया है जिसको पहले झुठलाया जा चुका है तथापि अज़ाब उतरने का वादा दिया गया है जो अन्तत: युद्धों के द्वारा पूरा हो गया परन्तु तीसरी प्रकार के निशान दिखलाने से पूर्णतया इन्कार किया गया है और स्वयं स्पष्ट है कि इस प्रश्न का उत्तर इन्कार ही था न कि कुछ और। क्योंकि काफ़िर कहते थे कि हम तब ईमान लायेंगे कि जब हम ऐसा निशान देखें कि पृथ्वी से आकाश तक सीढ़ी रखी जाए और तू हमारे देखते-देखते उस सीढ़ी के द्वारा पृथ्वी से आकाश पर चढ़ जाए और केवल तेरा आकाश पर चढ़ना हम कदापि स्वीकार नहीं करेंगे जब तक आकाश से ऐसी किताब न लाए जिसको हम पढ़ लें और पढ़ें भी अपने हाथ में लेकर। या तू ऐसा कर कि मक्का की ज़मीन में जो हमेशा पानी का संकट रहता है शाम और इराक़ के देश की तरह नहरें जारी हो जाएँ और प्रारंभ से दुनिया में आज तक हमारे जितने बुज़ुर्ग मर चुके हैं सब ज़िन्दा होकर आ जाएँ और इसमें क़ुस्सी बिन किलाब भी हो क्योंकि वह बूढ़ा हमेशा सच बोलता था उस से हम पूछेंगे कि तेरा दावा सत्य है या असत्य? यह बहुत ही स्वयं निर्मित निशान थे जो वे मांगते थे और फिर भी न स्पष्ट तौर पर अपितु शर्त पर शर्त लगाने से जिनका वर्णन पवित्र क़ुर्आन में जगह-जगह पर आया है। अत: सोचने वाले के लिए अरब के दुष्टों की ऐसी याचनाएं हमारे सय्यद व मौला नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रत्यक्ष चमत्कारों, स्पष्ट आयतों और रसूलों जैसे रो'ब पर स्पष्ट और खुला-खुला प्रमाण है। ख़ुदा जाने इन दिल के अंधों को हमारे मौला व आक़ा

की सच्चाई से भरे हुए थे तब ही तो सब के सब कुछ के अतिरिक्त कि जो उस अज़ाब को पहुँच गए थे जिसका उन को वादा दिया गया था अन्त में इस्लाम से सम्मानित हो गए थे और याद रहे कि ऐसा ला निषेध हज़रत मसीह के कलाम में भी पाया जाता है और वह यह है। फ़रीसीसों ने मसीह से निशान मांगे उसने आह खींचकर कहा कि इस युग के लोग क्यों निशान चाहते हैं मैं तुम से सच कहता हूँ इस युग के

शेष हाशिया - मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई के प्रकाशों ने किस श्रेणी तक विवश और तंग कर रखा था और क्या कुछ आकाशीय समर्थनों और बरकतों की वर्षाएं हो रही थीं कि जिन से स्तब्ध होकर और जिनकी रो'ब से मुंह फेर कर सर्वथा टालने और भागने के उद्देश्य से ऐसी अनुचित याचनाएं प्रस्तुत करते थे। स्पष्ट है कि इस प्रकार के चमत्कारों का दिखलाना ग़ैब पर ईमान की सीमा से बाहर है। यों तो अल्लाह तआला सामर्थ्यवान है कि पृथ्वी से आकाश तक सीढ़ी रख दे जिसको सब लोग देख लें और दो-चार हज़ार क्या दो चार करोड़ आदमियों को ज़िन्दा कर के उनके मुंह से उनकी सन्तान के सामने नुबुव्वत की सच्चाई की गवाही दिला दे। यह सबकुछ वह कर सकता है परन्तु थोड़ा सोच कर देखो कि इस पूर्ण प्रकटन से ग़ैब पर ईमान जो पुण्य और प्रतिफल का मदार है दूर हो जाता है और दुनिया क़यामत का नमूना हो जाती है। तो जिस प्रकार क़यामत के मैदान में जो पूर्ण प्रकटन का समय होगा ईमान काम नहीं आता। इसी प्रकार इस पूर्ण प्रकटन से ईमान लाना कुछ लाभप्रद नहीं अपितु ईमान उसी सीमा तक ईमान कहलाता है कि जब कुछ गोपनीयता भी शेष रहे अब समस्त पर्दे खुल गए तो फिर ईमान ईमान नहीं रहता इसी कारण समस्त अंबिया ग़ैब पर ईमान को दृष्टिगत रखते हुए चमत्कार दिखाते रहे हैं कभी किसी नबी ने ऐसा नहीं किया कि एक शहर का शहर ज़िन्दा कर के उनसे अपनी नुबुव्वत की गवाही दिला दे या आकाश तक सीढ़ी रख कर सब के सामने चढ़ कर समस्त संसार को तमाशा दिखलाए।

लोगों को कोई निशान नहीं दिया जायेगा देखो मरक़स अध्याय 8,11

अब देखो हज़रत मसीह ने कितनी सफ़ाई से इन्कार कर दिया है। यदि विचार करें तो आप का ऐतिराज़ इस ऐतिराज़ के आगे कुछ भी चीज़ नहीं क्योंकि आप ने केवल काफ़िरों का इन्कार प्रस्तुत किया और वह भी न सामान्य इन्कार अपितु विशेष निशानों के बारे में, और स्पष्ट है कि दुश्मन का इन्कार पूर्णतया संतोषजनक नहीं होता क्योंकि दुश्मन घटना के विरुद्ध भी कह जाता है परन्तु हज़रत मसीह तो स्वयं अपने मुंह से चमत्कारों के दिखाने से इन्कार कर रहे हैं और चमत्कारों के जारी होने के निषेध को युग के साथ संबंधित कर दिया है और फ़रमाते हैं कि इस युग के लोगों को कोई निशान न दिया जायेगा अतः इस से बढ़कर चमत्कारों के इन्कार का कौन सा स्पष्ट वर्णन हो सकता है और इस ला निषेध से बढ़कर और कौन सा ला निषेध होगा।

फिर दूसरी आयत का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है इसमें भी अगली पिछली आयतों के प्रसंग से बिलकुल अलग कर के उस पर ऐतिराज़ कर दिया है परन्तु असल आयत और उससे संबंधित पर दृष्टि डालने से प्रत्येक देखने वाला न्यायवान समझ सकता है कि आयत में एक भी ऐसा शब्द नहीं है जो चमत्कारों के इन्कार को बताता हो अपितु समस्त शब्द साफ़ बता रहे हैं कि चमत्कार अवश्य प्रकटन में आए। अतः वह आयत उसकी अन्य संबंधित आयतों के साथ यह है

وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝ وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ

وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا

(बनी इस्राईल - 59,60)

ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि यों तो क़यामत से पहले हर एक बस्ती को हम ने ही तबाह करना है या कठोर अज़ाब उतारना है यही किताब में लिखा जा चुका है। परन्तु इस समय हम कुछ उन पहले प्रकोपी निशानों को (जो अज़ाब के रूप में पहली उम्मतों पर उतर चुके हैं) इस लिए नहीं भेजते कि पहली उम्मत के लोग उस को झुठला चुके हैं। अतः हम ने समूद को बतौर निशान के जो अज़ाब की भूमिका थी ऊंटनी दी जो सत्य को दिखाने वाला निशान था (जिस पर उन्होंने अत्याचार किया अर्थात् वही ऊंटनी जिसकी बहुत अधिक खाने पीने के कारण हिज्र शहर के निवासियों के लिए जो समूद की क़ौम में से थे तालाब इत्यादि का पानी पीने के लिए शेष न रहा था और न उनके पशुओं के लिए कोई चरागाह रही थी और एक बड़े संकट रंज और विपत्ति में गिरफ्तार हो गई थी) और प्रकोपी निशानों के उतारने से हमारा उद्देश्य यही होता है कि लोग उनसे डरें अर्थात् प्रकोपी निशान तो केवल डराने के लिए दिखाए जाते हैं तो ऐसे प्रकोपी निशानों के मांगने से क्या लाभ जो पहली उम्मतों ने देखकर उन्हें झुठला दिया और उनके देखने से कुछ भी भयभीत और हताश न हुए।

यहाँ स्पष्ट हो कि निशान दो प्रकार के होते हैं –

(1) भय और अज़ाब के निशान जिनको प्रकोपी निशान भी कह सकते हैं

(2) ख़ुशख़बरी और सांत्वना के निशान जिनको दया के निशानों

का भी नाम दे सकते हैं।

भय के निशान सख़्त काफ़िरों और टेढ़े दिलों, अवज्ञाकारियों बेईमानों तथा फ़िरऔनी स्वभाव वालों के लिए प्रकट किए जाते हैं ताकि वह डरें और ख़ुदा तआला का प्रकोपी और प्रतापी रो'ब उनके दिलों पर छा जाए। और ख़ुशख़बरियों के निशान उन सत्याभिलाषियों, निष्कपट मोमिनों और सच्चाई के तलाश करने वालों के लिए प्रकट होते हैं जो दिल की गरीबी और विनम्रता से पूर्ण विश्वास और ईमान में वृद्धि के प्रत्याशी हैं और ख़ुशख़बरी के निशानों से डराना और धमकाना अभीष्ट नहीं होता अपितु अपने उन आज्ञाकारियों बन्दों को संतुष्ट करना और ईमान और विश्वास की परिस्थितियों में उन्नति देना और उनके व्याकुल सीने पर प्रेम और तसल्ली का हाथ रखना अभीष्ट होता है। तो मोमिन पवित्र क़ुर्आन के माध्यम से सदैव ख़ुशख़बरी के निशान पाता रहता है और ईमान तथा विश्वास में उन्नति करता चला जाता है। ख़ुशख़बरी के निशानों से मोमिन को सांत्वना मिलती है और वह व्याकुलता जो स्वाभाविक तौर पर मनुष्य में है जाती रहती है और सांत्वना दिल पर उतरती है मोमिन ख़ुदा तआला की किताब के अनुकरण की बरकत से आयु के अन्तिम दिन तक ख़ुशख़बरी के निशानों को पाता रहता है और सांत्वना तथा आराम प्रदान करने वाले निशान उस पर उतरते रहते हैं ताकि वह विश्वास और मारिफ़त में असीमित उन्नतियाँ करता जाए और अटल विश्वास तक पहुँच जाए तथा ख़ुशख़बरी के निशानों में एक आनन्द यह होता है कि जैसे मोमिन उनके उतरने से विश्वास और आत्मज्ञान और ईमान की शक्ति में उन्नति करता है ऐसा ही

वह ख़ुदा तआला की नेमतों और प्रत्यक्ष तथा आन्तरिक प्रतापी और गोपनीय उपकारों के अवलोकन के कारण जो ख़ुशख़बरी के निशानों में भरे हुए होते हैं प्रेम और इश्क में भी दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है। अतः वास्तव में महान और सुदृढ़ प्रभाव, मुबारक और उद्देश्य तक पहुँचाने वाले ख़ुशख़बरी के निशान ही होते हैं जो साधक को पूर्ण आत्मज्ञान और व्यक्तिगत प्रेम के उस पद तक पहुंचा देते हैं जो अल्लाह तआला के वलियों के लिए पदों का अन्त है और पवित्र क़ुर्आन में ख़ुशख़बरी के निशानों का बहुत कुछ वर्णन है यहाँ तक कि उसने उन निशानों को सीमित नहीं रखा अपितु एक अनश्वर वादा दे दिया है कि पवित्र क़ुर्आन के सच्चे अनुयायी उन निशानों को पाते रहेंगे जैसा कि वह फ़रमाता है

لَهُمُ الْبُشْرٰی فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَفِی الْاٰخِرَةِ لَا تَبْدِیْلَ لِکَلِمٰتِ اللّٰہِ ذٰلِکَ ھُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ۝

(यूनुस - 65)

अर्थात् ईमानदार लोग सांसारिक जीवन और आखिरत में भी ख़ुशख़बरी के निशान पाते रहेंगे जिनके द्वारा वे संसार और आखिरत में आत्मज्ञान और प्रेम के मैदानों में अपार उन्नतियाँ करते जायेंगे। यह ख़ुदा की बातें हैं जो कभी नहीं टलेंगी और ख़ुशख़बरी के निशानों को पा लेना यही महान सफलता है (अर्थात् यही एक बात है जो प्रेम और आत्मज्ञान के अन्तिम स्थान तक पहुंचा देती है)

अब जानना चाहिए कि ख़ुदा तआला ने इस आयत में जो ऐतिराज़ करने वाले ने ऐतिराज़ के रूप में प्रस्तुत की है केवल डराने के निशानों का वर्णन किया है जैसा कि आयत

وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰیٰتِ اِلَّا تَخْوِیْفًا

(बनी इस्राईल - 60)

से स्पष्ट हो रहा है। क्योंकि यदि ख़ुदा तआला के कुल निशानों को प्रकोपी निशानों में ही सीमित समझ कर इस आयत के यह मायने किए जाएँ कि हम समस्त निशानों को केवल डराने के उद्देश्य से ही भेजा करते हैं तथा अन्य कोई उद्देश्य नहीं होता। तो यह मायने स्पष्ट तौर पर ग़लत हैं। जैसा कि अभी वर्णन हो चुका है कि निशान दो उद्धेश्यों से भेजे जाते हैं या डराने के उद्देश्य से या ख़ुशख़बरी के उद्देश्य से। इन्हीं दो प्रकारों को पवित्र क़ुर्आन और बाइबल प्रकट कर रही है। अतः जबकि निशान दो प्रकार के हुए तो उपरोक्त आयत में जो शब्द अलआयात है (जिसके मायने वे निशान) बहरहाल इसी तावील पर सही तौर पर चरितार्थ होगा कि निशानों से प्रकोपी निशान अभिप्राय हैं क्योंकि यदि यह मायने न लिए जाएँ तो इस से यह अनिवार्य आता है कि समस्त निशान जो ख़ुदा तआला की क़ुदरत के तहत दाख़िल हैं। डराने के प्रकार में ही सीमित हैं हालाँकि केवल डराने के प्रकार में ही समस्त निशानों का निर्भर समझना घटना के सर्वथा विरुद्ध है जो न अल्लाह की किताब की दृष्टि से और न बुद्धि की दृष्टि से और न किसी पवित्र हृदय की अन्तरात्मा की दृष्टि से सही हो सकता है।

अब चूंकि इस बात का साफ़ निर्णय हो गया कि निशानों के दो प्रकारों से में केवल डराने के निशानों का उपरोक्त आयतों में ज़िक्र है तो यह दूसरी बात प्रतिप्रश्न की शेष रही कि क्या इस आयत के (जो وَمَا مَنَعَنَا الخ है) यह मायने समझने चाहिए कि डराने का कोई निशान ख़ुदा तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

के हाथ पर प्रकट नहीं किया या यह मायने समझने चाहिए कि डराने के निशानों में से वे निशान प्रकट नहीं किए गए जो पहली उम्मतों को दिखाए गए थे या यह तीसरे मायने विश्वसनीय हैं कि दोनों प्रकार के डराने के निशान आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ पर प्रकट होते रहे हैं उन विशेष प्रकार के कुछ निशानों के अतिरिक्त जिन को पहली-पहली उम्मतों ने देखकर झुठला दिया था और उनको चमत्कार नहीं समझा था।

अतः स्पष्ट हो कि विवादित आयतों पर दृष्टि डालने से पूर्ण सफ़ाई के साथ खुल जाता है कि पहले और दूसरे मायने किसी भी तरह सही नहीं। क्योंकि उपरोक्त आयत के निशानों से यह समझ लेना कि नाना प्रकार के वे समस्त डराने वाले निशान जो हम भेज सकते हैं और समस्त वे परे से परे अज़ाब के निशान जिनके भेजने पर असीमित तौर पर हम सामर्थ्यवान हैं इसलिए हम ने नहीं भेजे कि पहली उम्मतें उस को झुठला चुकी हैं यह मायने सर्वथा ग़लत हैं। क्योंकि स्पष्ट है कि पहली उम्मतों ने उन्हीं निशानों को झुठलाया जो उन्होंने देखे थे कारण यह कि झुठलाने के लिए यह अवश्य है कि जिस चीज़ को झुठलाया जाए प्रथम उसका अवलोकन भी हो जाए। जिस निशान को अभी देखा ही नहीं उसको झुठलाना कैसा हालाँकि अदृष्ट निशानों में से ऐसे उत्तम श्रेणी के निशान भी अल्लाह तआला की क़ुदरत के अन्तर्गत हैं जिसको कोई मनुष्य झुठला न सके और सब गर्दनें उनकी ओर झुक जाएँ। क्योंकि ख़ुदा तआला प्रत्येक निशान दिखाने पर सामर्थ्यवान है और फिर चूंकि अल्लाह तआला की क़ुदरत के निशान असीमित और अनंत हैं तो फिर यह कहना क्योंकर सही हो

सकता है कि सीमित समय में वे सब देखे भी गए और उनको झुठला भी दिया। सीमित समय में तो वही चीज़ देखी जाएगी जो सीमित होगी। बहरहाल इस आयत के यही मायने सही होंगे कि जो कुछ निशान पहले काफ़िर देख चुके थे और उन्हें झुठला चुके थे उनका दोबारा भेजना व्यर्थ समझा गया जैसा कि प्रसंग भी इन्हीं मायनों को बताता है अर्थात् इस अवसर पर जो समूद की ऊंटनी का अल्लाह तआला ने वर्णन किया है वह एक भारी प्रसंग इस बात पर है कि इस स्थान पर पहले और रद्द किए हुए निशानों का ज़िक्र है जो डराने के निशानों में से थे और यही तीसरे मायने हैं जो सही और दुरुस्त हैं।

फिर इस स्थान पर एक और बात न्यायवानों के सोचने के योग्य है जिस से उन पर प्रकट होगा कि आयत

وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ الخ

(बनी इस्राईल - 60)

से चमत्कारों का सबूत ही पाया जाता है न कि चमत्कारों का निषेध, क्योंकि 'अलआयात' के शब्द पर जो अलिफ़ लाम आया है वह नहव के नियमों के अनुसार दो बातों से खाली नहीं या कुल के मायने देगा या विशेष के यदि कुल के मायने देगा तो यह मायने किए जायेंगे कि हमें कुल चमत्कारों के भेजने से कोई बात बाधक नहीं हुई परन्तु अगर अगलों का उन्हें झुठलाना और यदि विशेष के मायने देगा तो यह मायने होंगे कि हमें उन विशेष निशानों के भेजने से (जिन्हें इनकारी मांगते हैं) कोई बात बाधक नहीं हुई परन्तु यह कि उन निशानों को अगलों ने तो झुठलाया। बहरहाल इन दोनों स्थितियों में निशानों का आना सिद्ध होता है। क्योंकि अगर यह मायने हैं कि हम ने समस्त निशानियाँ पहली

उम्मतों के झुठलाने के कारण नहीं भेजीं तो इस से कुछ निशानों का भेजना सिद्ध होता है जैसे यदि कोई कहे कि मैंने अपना समस्त माल ज़ैद को नहीं दिया तो इस से साफ़ सिद्ध होता है कि उस ने अपने माल का कुछ भाग ज़ैद को अवश्य दिया है और यदि यह मायने लें कि हम ने कुछ विशेष निशान नहीं भेजे तो भी कुछ अन्य का भेजना सिद्ध है। उदाहरणतया यदि कोई कहे कि कुछ विशेष चीज़ें मैंने ज़ैद को नहीं दी तो इस से साफ़ पाया जायेगा कि कुछ अन्य अवश्य दी हैं। बहरहाल जो व्यक्ति पहले इस आयत के अगले पिछले प्रसंगों की आयतों को देखे कि कैसी वे दोनों ओर से अज़ाब के निशानों का किस्सा बता रही हैं और फिर एक दूसरी नज़र उठावे और विचार करे कि क्या यह अर्थ सही और उचित हैं कि ख़ुदा तआला के समस्त निशानों और अद्‌भुत कामों की जो उसकी अनन्त क़ुदरत से कभी-कभी पैदा होने वाले और असीमित हैं पहले लोग अपने सीमित युग में झुठला चुके हों और फिर एक तीसरी न्यायपूर्ण नज़र से काम लेकर सोचे कि क्या यहाँ भय के निशानों का एक विशेष वर्णन है या ख़ुशख़बरी और दया के निशानों का भी कुछ वर्णन है और फिर चौथी दृष्टि अलआयात के अलिफ़ लाम पर भी डाल दें कि वे किन मायनों का लाभ दे रहा है तो इस चार प्रकार की दृष्टि के बाद इसके अतिरिक्त कि कोई पक्षपात के कारण सत्य प्रियता से दूर जा पड़ा हो प्रत्येक व्यक्ति अपने अन्दर से न एक गवाही अपितु हज़ारों गवाहियाँ पाएगा कि इस स्थान पर नफ़ी का अक्षर केवल निशानों की एक विशेष प्रकार की नफ़ी के लिए आया है जिसका दूसरे प्रकारों पर कुछ प्रभाव नहीं अपितु इस से उनका निश्चित अस्तित्व होना सिद्ध हो रहा है और इन आयतों में अत्यन्त सफ़ाई से

अल्लाह तआला बता रहा है कि इस समय डराने वाले निशान जिन का ये लोग निवेदन करते हैं केवल इस कारण से नहीं भेजे गए कि पहली उम्मतें उनको झुठला चुकी हैं अतः जो निशान पहले अस्वीकार किए गए अब बार-बार उन्हीं को उतारना कमज़ोरी की निशानी है और असीमित क़ुदरतों वाले की शान से दूर। अतः इन आयतों में यह स्पष्ट संकेत है कि अज़ाब के निशान अवश्य उतरेंगे परन्तु और रंगों में। यह क्या आवश्यकता है कि वही निशान हज़रत मूसा के या वही निशान हज़रत नूह और क़ौम-ए-लूत और आद और समूद के प्रकट किए जाएँ। अतः इन आयतों का विवरण दूसरी आयतों में अधिक किया गया है जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है –

وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ

(अलअनआम - 26)

وَاِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ؕ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ

(अलअनआम - 125)

قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَ كَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ۝

(अलअनआम - 58)

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝

(अलअनआम - 105)

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ

(अलअनकबूत - 54)

قُلۡ هُوَ الۡقَادِرُ عَلٰۤى اَنۡ يَّبۡعَثَ عَلَيۡكُمۡ عَذَابًا مِّنۡ فَوۡقِكُمۡ اَوۡ مِنۡ تَحۡتِ اَرۡجُلِكُمۡ اَوۡ يَلۡبِسَكُمۡ شِيَعًا وَّ يُذِيۡقَ بَعۡضَكُمۡ بَاۡسَ بَعۡضٍ ؕ

(अलअनआम - 66)

وَ قُلِ الۡحَمۡدُ لِلّٰهِ سَيُرِيۡكُمۡ اٰيٰتِهٖ فَتَعۡرِفُوۡنَهَا ؕ

(अन्नमल - 94)

قُلۡ لَّكُمۡ مِّيۡعَادُ يَوۡمٍ لَّا تَسۡتَاۡخِرُوۡنَ عَنۡهُ سَاعَةً وَّ لَا تَسۡتَقۡدِمُوۡنَ ۝

(सबा - 31)

وَ يَسۡتَنۡۢبِـُٔوۡنَكَ اَحَقٌّ هُوَ قُلۡ اِىۡ وَ رَبِّىۡۤ اِنَّهٗ لَحَقٌّ وَ مَاۤ اَنۡتُمۡ بِمُعۡجِزِيۡنَ ۝

(यूनुस - 54)

سَنُرِيۡهِمۡ اٰيٰتِنَا فِى الۡاٰفَاقِ وَفِىۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمۡ اَنَّهُ الۡحَقُّ

(हा मीम अस्सजद: - 54)

خُلِقَ الۡاِنۡسَانُ مِنۡ عَجَلٍ سَاُورِيۡكُمۡ اٰيٰتِىۡ فَلَا تَسۡتَعۡجِلُوۡنِ ۝

(अलअंबिया - 38)

अर्थात् यह लोग समस्त निशानों को देखकर ईमान नहीं लाते। फिर जब तेरे पास आते हैं तो तुझ से लड़ते हैं और जब कोई निशान पाते हैं तो कहते हैं कि हम कभी नहीं मानेंगे। जब तक हमें स्वयं ही वे बातें प्राप्त न हों जो रसूलों को मिलती हैं। कह मैं पूर्ण सबूत लेकर अपने रब्ब की ओर से आया हूँ और तुम उस सबूत को देखते हो और झुठला रहे हो। जिस चीज़ को तुम शीघ्रता से मांगते हो (अर्थात् अज़ाब) वह तो मेरे अधिकार में नहीं। अन्तिम आदेश जारी करना तो ख़ुदा ही का पद वही सत्य को खोल देगा और वही खैरुलफ़ासिलीन है

जो एक दिन मेरा और तुम्हारा फैसला कर देगा। ख़ुदा ने मेरी रिसालत पर तुम्हें रौशन निशान दिए हैं। तो जो उनको पहचान ले उसने अपने ही नफ़्स को लाभ पहुँचाया और जो अँधा हो जाए उसका बवाल भी उसी पर है मैं तो तुम पर निगरान नहीं। और तुझ से अज़ाब के लिए जल्दी करते हैं। कह वही प्रतिपालक इस बात पर समर्थ है कि ऊपर से या तुम्हारे पाँवों के नीचे से कोई अज़ाब तुम पर भेजे और चाहे तो तुम्हें दो सदस्य बना कर एक सदस्य की लड़ाई का दूसरे को स्वाद चखा दे और यह कि सब ख़ूबियाँ अल्लाह के लिए हैं।वह तुम्हें ऐसे निशान दिखायेगा जिन्हें तुम पहचान लोगे और कह तुम्हारे लिए ठीक-ठीक एक वर्ष की मीआद है★ न उसे तुम विलंब कर सकोगे और न जल्दी। और तुझ से पूछते हैं कि क्या यह सच बात है। कह हाँ मुझे क़सम है अपने रब्ब की कि यह सच है और तुम ख़ुदा तआला को उसके वादों से रोक नहीं सकते। हम शीघ्र ही उनको अपने निशान देखायेंगे। उनके देश के चारों ओर तथा स्वयं उनमें भी यहाँ तक की उन पर खुल जायेगा कि यह नबी सच्चा है। मनुष्य की प्रकृति में जल्दी है मैं शीघ्र ही तुम्हें अपने निशान दिखाऊंगा अतः तुम मुझसे जल्दी तो मत करो।

अब देखो कि इन आयतों में मांगे हुए निशान के दिखाने के बारे में कैसे साफ़ और पक्के वादे किए गए हैं यहाँ तक कि यह भी कहा गया कि ऐसे खुले-खुले निशान दिखाए जायेंगे कि तुम उनको

★**हाशिया :-** यौम से अभिप्राय यहाँ वर्ष है। अत: बाइबल में भी यह मुहावरा पाया जाता है तो पूरे वर्ष के बाद बद्र की लड़ाई का अज़ाब मक्का वालों पर उतरा जो पहली लड़ाई थी।

पहचान लोगे और यदि कोई कहे कि यह तो हमने माना कि अज़ाब के निशानों के बारे में जगह-जगह पवित्र क़ुर्आन में वादे दिए गए हैं कि वे अवश्य किसी दिन दिखलाये जायेंगे और यह भी हमने स्वीकार किया कि वे सब वादे इस युग में पूरे भी हो गए कि जब ख़ुदा तआला ने अपनी ख़ुदावंदी क़ुदरत दिखाकर मुसलमानों की कमज़ोरी और अशक्तता को दूर कर दिया और कुछ से हज़ारों तक उनकी नौबत पहुंचा दी और उनके द्वारा उन समस्त काफ़िरों को तहे तेग़ किया जो मक्का में अपनी उद्दंडता और अत्याचार के युग में अत्यन्त अहंकार से अज़ाब का निशान माँगा करते थे परन्तु इस बात का सबूत पवित्र क़ुर्आन में कहाँ मिलता है कि उन निशानों के अतिरिक्त और भी निशान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दिखाए थे अतः स्पष्ट हो कि निशानों के दिखाने का वर्णन पवित्र क़ुर्आन में जगह-जगह आया है। कुछ जगहों पर आपने पहले निशानों का हवाला भी दिया है देखो आयत

كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ

(अलअनआम - 111)

कुछ स्थानों पर कुफ़्फ़ार के अन्याय का वर्णन कर के उन का इस प्रकार इक़रार दर्ज किया है कि वे निशानों को देख कर कहते हैं कि वह जादू है देखो आयत -

وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝

(अलक़मर - 3)

कुछ स्थानों पर जो निशानों के देखने का मुनकिरों ने स्पष्ट इन्कार कर दिया है उनकी वे गवाहियाँ प्रस्तुत की हैं। जैसा की फ़रमाता है

وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ

(आले इमरान - 87)

अर्थात् उन्होंने रसूल के सच्चे होने पर गवाही दी और उन को खुले-खुले निशान पहुँच गए तथा कुछ स्थानों पर कुछ चमत्कारों को स्पष्टतापूर्वक वर्णन कर दिया है जैसे श़क़्क़ुल क़मर का चमत्कार जो एक महान चमत्कार और ख़ुदा की क़ुदरत का पूर्ण नमूना है, जिसकी व्याख्या हमने पुस्तक "सुरमा चश्म आर्य" में भली-भांति कर दी है जो व्यक्ति विस्तृत देखना चाहे उसमें देख सकता है यहाँ यह भी याद रहे कि जो लोग आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से स्वयं बनाये हुए निशान माँगा करते थे अधिकतर वही आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निशानों के अन्ततः गवाह भी बन गए थे क्योंकि वही लोग तो थे जिन्होंने इस्लाम से सम्मानित होकर इस्लाम धर्म को पूरब और पश्चिम में फैलाया तथा चमत्कारों और भविष्यवाणियों के बारे में हदीस की पुस्तकों में अपने देखने की गवाहियाँ लिखवाईं फिर इस युग में एक विचित्र पद्धति है कि उन धार्मिक बुज़ुर्गों के उस असभ्यता के युग के इन्कारों को बार-बार प्रस्तुत करते हैं जिनसे अन्त में स्वयं पृथक और तौबा करने वाले हो गए थे परन्तु उनकी उन गवाहियों को नहीं मानते जो सदमार्ग पर आने पर उन्होंने प्रस्तुत की हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चमत्कार तो चारों ओर से चमक रहे हैं वे क्योंकर चुप रह सकते हैं केवल जो चमत्कार सहाबा की गवाहियों से सिद्ध हैं वे तीन हज़ार चमत्कार हैं और भविष्यवाणियाँ तो शायद दस हज़ार से भी अधिक होंगी जो अपने समयों पर पूरी हो गईं और होती जाती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ चमत्कार और

भविष्यवाणियाँ पवित्र क़ुर्आन की ऐसी हैं कि वे हमारे लिए भी इस युग में देखी हुई और महसूस की हुई का आदेश रखती हैं और कोई उनसे इन्कार नहीं कर सकता अतः वे यह हैं –

(1) अज़ाब के निशान का चमत्कार जो उस समय के काफ़िरों को दिखाया गया था यह हमारे लिए भी वास्तव में ऐसा ही निशान है जिसको चश्मदीद कहना चाहिए। कारण यह कि अत्यन्त निश्चित मुक़द्दमों का एक आवश्यक प्रणाम है जिस से कोई सहमत और विरोधी किसी प्रकार से इन्कार नहीं कर सकता। प्रथम यह मुक़द्दमा जो चमत्कार की बुनियाद के तौर पर है नितांत स्पष्ट और मान्य सबूत है कि यह अज़ाब का निशान उस समय माँगा गया था कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के कुछ साथी मक्के में सत्य के प्रचार के कारण स्वयं सैकड़ों कष्टों, पीड़ाओं और दुखों में ग्रस्त थे तथा इस्लाम धर्म के लिए वे दिन ऐसे कमज़ोरी के दिन थे कि स्वयं मक्का के काफ़िर हंसी ठठ्ठा करते हुए मुसलमानों को कहा करते थे कि यदि तुम सत्य पर हो तो तुम्हें हमारे हाथ से इतना अज़ाब, संकट, दुःख और पीड़ा क्यों पहुँच रही है और वह ख़ुदा जिस पर तुम भरोसा करते हो वह क्यों तुम्हारी सहायता नहीं करता और क्यों तुम एक थोड़ी जमाअत हो जो शीघ्र ही मिट जाने वाली है और यदि तुम सच्चे हो तो क्यों हम पर अज़ाब नहीं उतरता? इन प्रश्नों के उत्तर में जो कुछ काफ़िरों को पवित्र क़ुर्आन के विभिन्न स्थानों में तंगी और कष्टों में कहा गया वह दूसरा मुक़द्दमा इस भविष्यवाणी की महान प्रतिष्ठा समझने के लिए है क्योंकि वह युग आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उन के सहाबा पर ऐसा

संवेदनशील युग था कि हर समय अपने प्राणों का भय था और चारों ओर असफलता मुंह दिखा रही थी तो ऐसे युग में काफ़िरों को उन से अज़ाब का निशान मांगने के समय स्पष्ट तौर पर यह कहा गया था कि शीघ्र ही तुम को इस्लाम की विजय और तुम्हारे दण्डित होने का निशान दिखलाया जायेगा और इस्लाम जो अब एक बीज की तरह दिखाई देता है किसी दिन एक बड़े वृक्ष के समान स्वयं को व्यक्त करेगा और वे जो अज़ाब का निशान मांगते हैं वे तलवार की धार से क़त्ल किए जायेंगे और समस्त अरब प्रायद्वीप कुफ्र और काफ़िरों से साफ़ किया जायेगा और समस्त अरब की हुकूमत मोमिनों के हाथ में आ जाएगी और ख़ुदा तआला इस्लाम धर्म को अरब के देश में इस प्रकार से जमा देगा कि फिर मूर्ति पूजा कभी पैदा नहीं होगी और वर्तमान हालत जो भय की हालत है पूर्णतया अमन के साथ बदल जाएगी तथा इस्लाम शक्ति पकड़ेगा और विजयी होता चला जायेगा। यहाँ तक कि दूसरे देशों तक अपनी सहायता और विजय का साया डालेगा और दूर-दूर तक उसकी विजयें फैल जाएँगी और एक बड़ी बादशाहत स्थापित हो जाएगी जिसका दुनिया के अन्त तक पतन नहीं होगा।

अब जो व्यक्ति पहले इन दोनों मुक़द्दमों पर दृष्टि डाल कर मालूम कर ले कि वह युग जिसमें यह भविष्यवाणी की गई इस्लाम के लिए कैसी तंगी, असफलता और संकट का युग था तथा जो भविष्यवाणी की गई वह वर्तमान हालत से कितनी विपरीत और विचार और अनुमान से अत्यन्त दूर अपितु स्पष्ट असंभव बातों में से दिखाई देती थी। तत्पश्चात इस्लाम के इतिहास पर जो दुश्मनों और दोस्तों के

हाथ में मौजूद है एक न्यायपूर्ण दृष्टि डालें कि कैसी सफ़ाई से यह भविष्यवाणी पूरी हो गई और दिलों पर इस का भयानक प्रभाव पड़ा और कैसे पूरब और पश्चिम में समस्त शक्ति और ताक़त के साथ उसका प्रकटन हुआ तो इस भविष्यवाणी को निश्चित और अटल तौर पर चशमदीद चमत्कार ठहराएगा जिसमें उसको एक कण भर भी सन्देह और शंका नहीं होगी।

फिर पवित्र क़ुर्आन का दूसरा चमत्कार जो हमारे लिए देखा हुआ और महसूस सा आदेश रखता है वे अद्‌भुत परिवर्तन हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा में पवित्र क़ुर्आन के अनुकरण की बरकत तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगत के प्रभाव से प्रकटन में आईं। जब हम इस बात को देखते हैं वे लोग इस्लाम में सम्मानित होने से पहले किस तरीके और आदत के आदमी थे और फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की संगत से सम्मानित और पवित्र क़ुर्आन के अनुकरण से किस रंग में आ गए और कैसे शिष्टाचार में, आस्थाओं में, चलन में, वार्तालाप में, रफ़्तार में, चरित्र में और अपनी समस्त आदतों में बुरी हालत से परिवर्तित होकर नितांत शुद्ध और पवित्र हालत में दाख़िल किए गए तो हमें इस महान प्रभाव को देखकर जिसने उनके ज़ंग खाए हुए अस्तित्वों को एक विचित्र ताज़गी और प्रकाश और चमक प्रदान कर दी थी इक़रार करना पड़ता है कि यह परिवर्तन एक विलक्षण परिवर्तन था जो विशेष तौर पर ख़ुदा तआला के हाथ ने किया। पवित्र क़ुर्आन में ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि मैंने उनको मुर्दा पाया और ज़िन्दा किया और नर्क के गढ़े में गिरते देखा तो उस भयानक और भयंकर हालत

से छुड़ाया, बीमार पाया और उन्हें अच्छा किया, अन्धकार में पाया और उन्हें प्रकाश प्रदान किया। और ख़ुदा तआला ने इस चमत्कार के दिखाने के लिए एक ओर अरब के लोगों की वे ख़राब हालतें लिखी हैं जो वे इस्लाम से पहले रखते थे तथा दूसरी ओर उनकी वे पवित्र हालतें वर्णन की हैं जो इस्लाम लाने के बाद उनमें पैदा हो गई थीं ताकि जो व्यक्ति जो उन पहली हालतों को देखे जो कुफ्र के युग में थीं फिर इसकी तुलना में वह हालत पढ़े जो इस्लाम लाने के बाद प्रकटन में आईं तो इन दोनों प्रकार के जीवन चरित्र पर अवगत होने से पूर्ण विश्वास से समझ लेगा कि यह परिवर्तन एक विलक्षण परिवर्तन है जिसे चमत्कार कहना चाहिए।

फिर पवित्र क़ुर्आन का तीसरा चमत्कार जो हमारी नज़रों के सामने मौजूद है उसकी वास्तविकताएं, अध्यात्मज्ञान, रहस्यात्मक तथ्य हैं जो उसकी सरस और सुबोध इबारतों में भरे हुए हैं इस चमत्कार को पवित्र क़ुर्आन में बड़े ज़ोर-शोर से वर्णन किया गया है और फ़रमाया है कि यदि समस्त जिन्न और इन्सान इकट्ठे होकर उसका सदृश बनाना चाहें तो उनके लिए संभव नहीं यह चमत्कार इस तर्क से सिद्ध और निश्चित अस्तित्व है कि इस युग तक कि 13 सौ वर्ष से अधिक गुज़र रहा है बावजूद इसके कि पवित्र क़ुर्आन की मुनादी दुनिया के प्रत्येक ओर हो रही है और बड़े ज़ोर से हल मिन मुआरिज़ (है कोई मुक़ाबला के लिए) का नगाड़ा बजाया जाता है परन्तु कहीं किसी ओर से आवाज़ नहीं आई। तो इस से इस बात का स्पष्ट सबूत मिलता है कि समस्त मानवीय शक्तियाँ पवित्र क़ुर्आन के मुकाबले और बहस से असमर्थ हैं अपितु यदि पवित्र क़ुर्आन की

सैकड़ों ख़ूबियों में से केवल एक ख़ूबी को प्रस्तुत कर के उसका उदाहरण माँगा जाए तो इन्सान जिसकी बुनियाद ही कमज़ोर है उससे यह भी असंभव है कि इस एक भाग का उदाहरण प्रस्तुत कर सके। उदाहरणतया पवित्र क़ुर्आन की ख़ूबियों में से एक यह भी ख़ूबी है कि वह समस्त धार्मिक मआरिफ़ पर आधारित है तथा कोई धार्मिक सच्चाई जो सत्य और दूरदर्शिता से संबंध रखती है ऐसी नहीं जो पवित्र क़ुर्आन में न पाई जाती हो परन्तु ऐसा व्यक्ति कौन है कि कोई दूसरी ऐसी किताब दिखलाए जिसमें यह विशेषता मौजूद हो और यदि किसी को इस बात में सन्देह हो कि पवित्र क़ुर्आन समस्त धार्मिक सच्चाइयों का संग्रहीता है तो ऐसा सन्देह कर्ता चाहे, ईसाई हो चाहे आर्य, चाहे ब्रह्म हो और चाहे नास्तिक अपने तौर तरीक पर परीक्षा कर के अपनी संतुष्टि करा सकता है ओर हम संतुष्ट करने के ज़िम्मेदार हैं। बशर्ते कि कोई सत्याभिलाषी हमारी और रुजू करे। बाइबल में जितनी पवित्र सच्चाइयां हैं या फिलास्फ़रों की पुस्तकों में जितनी सत्य और दूरदर्शिता की बातें हैं जिन पर हमारी दृष्टि पड़ी है या हिन्दुओं के वेद इत्यादि में जो संयोग से कुछ सच्चाइयां दर्ज हो गई हैं या शेष रह गई हैं जिनको हमने देखा है या सूफ़ियों की सैकड़ों पुस्तकों में जो दूरदर्शिता और अध्यात्मज्ञान के रहस्य हैं जिन पर हमें सूचना हुई है उन सबको हम पवित्र क़ुर्आन में पाते हैं और इस पूर्ण इस्तक़रः और इस पूर्ण खोज से जो तीस वर्ष के समय से अत्यन्त गहरी और घेरने वाली दृष्टि के द्वारा हमको प्राप्त है अत्यन्त अटल और विश्वास से हम पर यह बात खुल गई है कि कोई रूहानी सच्चाई जो नफ़्स की पूर्ति मानसिक तथा हार्दिक शक्तियों के प्रशिक्षण के लिए प्रभाव रखती है ऐसी नहीं

है जो पवित्र क़ुर्आन में दर्ज न हो और यह केवल हमारा ही अनुभव नहीं अपितु यही पवित्र क़ुर्आन का दावा भी है जिसकी आज़मायश न केवल मैंने अपितु हज़ारों उलमा प्रारंभ से करते आए और उसकी सच्चाई की गवाही देते आए हैं।

फिर पवित्र क़ुर्आन का चौथा चमत्कार उसके रूहानी प्रभाव हैं जो हमेशा उसमें सुरक्षित चले आते हैं अर्थात् यह कि उसका अनुकरण करने वाले ख़ुदा तआला की स्वीकारिता की श्रेणियों को पहुँचते हैं और ख़ुदा के वार्तालाप से सम्मानित किए जाते हैं। ख़ुदा तआला उनकी दुआओं को सुनता और उन्हें प्रेम तथा दया के मार्ग से उत्तर देता है और कुछ परोक्ष के रहस्यों पर नबियों की तरह उनको अवगत करता है और अपने समर्थन और सहायता के निशानों से दूसरी सृष्टियों से उन्हें पृथक करता है। यह भी ऐसा निशान है कि जो क़यामत तक उम्मत-ए-मुहम्मदिया में क़ायम रहेगा और हमेशा प्रकट होता चला आया है और अब भी मौजूद और निश्चित अस्तित्व है। मुसलमानों में से ऐसे लोग अब भी दुनिया में पाए जाते हैं कि जिनको अल्लाह तआला अपने विशेष समर्थनों से समर्थित कर के सही और सच्चे इल्हामों तथा ख़ुशख़बरियों और ग़ैबी कश्फों से गौरवान्वित करता है।

अब हे सत्याभिलाषियो और सच्चे निशानों के भूखो और प्यासो! इन्साफ़ से देखो और थोड़ी पवित्र दृष्टि से विचार करो कि जिन निशानों का ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में वर्णन किया है किस उच्च श्रेणी के निशान हैं और कैसे हर युग के लिए मशहूद (देखे हुए) और महसूस (अनुभव किए हुए) का आदेश रखते हैं। पहले नबियों के चमत्कारों का अब नाम व निशान शेष नहीं केवल क़िस्से हैं ख़ुदा

जाने उनकी वास्तविकता कहाँ तक सही है। विशेष तौर पर हज़रत मसीह के चमत्कार जो इन्जीलों में लिखे हैं किस्सों और कहानियों के रंग में होने के बावजूद तथा बहुत सी अतिश्योक्तियों के बावजूद जो उनमें पाई जाती हैं। उन पर ऐसे संदेह और शंकाएं आती हैं कि जिनसे उन्हें पूर्णतया साफ़ और पवित्र कर के दिखाना बहुत कठिन है। यदि हम कल्पना के तौर पर स्वीकार भी कर लें कि जो कुछ प्रचलित इन्जीलों में हज़रत मसीह के बारे में बयान किया गया है कि लूले और लंगड़े और लकवाग्रस्त तथा अंधे इत्यादि बीमार उनके छूने से अच्छे हो जाते थे। यह समस्त वर्णन अतिश्योक्ति के बिना है और प्रत्यक्ष पर ही चरितार्थ है कोई और अर्थ उसके नहीं। तब भी हज़रत मसीह की इन बातों से कोई बड़ी ख़ूबी नहीं सिद्ध होती। प्रथम तो उन्हीं दिनों में एक तालाब भी ऐसा था कि उसमें एक विशेष समय में ग़ोता मारने से ऐसे सब रोग तुरन्त दूर हो जाते थे जैसा कि स्वयं इंजील में वर्णन है फिर इसके अतिरिक्ति लम्बे समय के अन्वेषणों से इस बात को सिद्ध कर दिया है कि रोगों को समाप्त करने की महारत बहुत सी विद्याओं में से एक विद्या है जिसके अब भी बहुत लोग शौकीन पाए जाते हैं। जिसमें अत्यन्त ध्यान तथा मानसिक शक्तियों के व्यय करने और विचार के आकर्षण का प्रभाव डालने के लिए अभ्यास की आवश्यकता है। अतः इस विद्या का नुबुव्वत से कुछ संबंध नहीं अपितु सदाचारी पुरुष होना भी इसके लिए आवश्यक नहीं और सदैव से ये विद्या प्रचलित होती चली आई है। मुसलमानों में कुछ बुज़ुर्ग लोग जैसे मुहियुद्दीन (इब्न) अरबी साहिब फ़ुसूस और कुछ नक्शबंदियों के बुज़ुर्ग इस काम में अभ्यस्त गुज़रे हैं। ऐसे कि उनके समय में उनका

उदाहरण नहीं पाया गया अपितु कुछ के बारे में वर्णन किया गया है कि वे अपने पूर्ण ध्यान से ख़ुदा तआला के आदेश से ताज़ा मुर्दों से बातें कर के दिखला देते थे★ और दो-दो तीन-तीन सौ रोगियों को अपने दायें बाएं बिठा कर एक ही नज़र से स्वस्थ कर देते थे और कुछ जो अभ्यास में कमज़ोर थे वे हाथ लगा कर या रोगी के कपडे को छू कर रोगमुक्त करते थे। इस अभ्यास में आमिल अमल के समय कुछ ऐसा अहसास करता है कि जैसे उसके अन्दर से रोगी पर प्रभाव डालने के समय एक शक्ति निकलती है और कभी रोगी को भी यह दिखाई देता है कि उसके अन्दर से एक ज़हरीला तत्व गति कर के निचले अवयवों की ओर उतरता चला जाता है यहाँ तक कि पूर्णतया समाप्त हो जाता है। इस विद्या में इस्लाम में बहुत सी पुस्तकें मौजूद हैं और मैं विचार करता हूँ कि हिन्दुओं में भी इसकी पुस्तकें होंगी। वर्तमान में जो अंग्रेज़ों ने मस्मरेज़म की कला निकाली है वास्तव में वह भी इसी विद्या की एक शाखा है। इंजील पर विचार करने से ज्ञात होता है कि हज़रत मसीह को भी इस विद्या में कुछ अभ्यास था परन्तु निपूर्ण नहीं थे। उस समय के लोग सादा और इस विद्या से अपरिचित थे इसी कारण उस युग में यह अमल अपनी सीमा से अधिक प्रशंसनीय समझा गया था परन्तु पीछे से ज्यों-ज्यों इस विद्या की वास्तविकता खुलती गई लोग अपने उच्च विश्वास से पतन करते

★**हाशिया :-** ताज़ा मुर्दों का अमल ध्यान से कुछ मिनट या कुछ घंटो के लिए जीवित हो जाना प्रकृति के नियम के विरुद्ध नहीं जिस हालत में हम स्वयं अपनी आँखों से देखते हैं कि कुछ प्राणी मरने के पश्चात् किसी दवा से ज़िन्दा हो जाते हैं तो फिर मनुष्य का ज़िन्दा होना क्या कठिन और क्यों अनुमान से दूर है। इसी से।

गए। यहाँ तक कि यह राय व्यक्त की कि ऐसे अभ्यासों से रोगियों को अच्छा करना या पागलों को रोगमुक्त करना कुछ भी ख़ूबी की बात नहीं अपितु उसमें ईमानदार होना भी आवश्यक नहीं। कहाँ यह कि नुबुव्वत या विलायत पर यह तर्क हो सके। उनका यह भी कथन है कि शारीरिक रोगों को समाप्त करने के अमल का पूर्ण अभ्यास और उसी कार्य में दिन-रत स्वयं को डाले रखना रूहानी उन्नति के लिए अत्यन्त हानिप्रद है और ऐसे व्यक्ति के हाथ से रूहानी प्रशिक्षण का कार्य बहुत ही कम होता है और उसके हृदय की प्रकाशित करने वाली शक्ति अत्यधिक घट जाती है। सोचा जा सकता है कि इसी कारण से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम अपने रूहानी प्रशिक्षण में बहुत कमज़ोर निकले जैसा कि पादरी बटलर साहिब जो पद की दृष्टि तथा व्यक्तिगत योग्यता के कारण एक विशेष व्यक्ति मालूम होते हैं। वह बहुत अफ़सोस से लिखते हैं कि मसीह का रूहानी प्रशिक्षण बहुत ही कमज़ोर सिद्ध होता है और उनके संगत प्राप्त लोग जो हवारियों के नाम से जाने जाते थे अपने रूहानी प्रशिक्षण प्राप्त होने में और मानवीय शक्तियों की पूर्ण पूर्ति से कोई उच्च श्रेणी का नमूना न दिखला सके। (काश हज़रत मसीह ने अपने प्रत्यक्ष रोगों को समाप्त करने के कार्य की ओर कम ध्यान किया होता और वही ध्यान अपने हवारियों की आन्तरिक कमज़ोरियों और बीमारियों पर डालते विशेष तौर पर यहूदा इस्क्र्यूती पर) इस स्थान पर कथित साहिब यह भी फ़रमाते हैं कि यदि अरबी नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सहाबा के मुकाबले पर हवारियों के रूहानी प्रशिक्षण और धार्मिक दृढ़ता की तुलना की जाए तो हमें अफ़सोस के साथ इक़रार करना पड़ता है कि हज़रत मसीह

के हवारी रूहानी तौर पर प्रशिक्षण प्राप्त होने में बहुत ही कच्चे और पीछे रहे हुए थे तथा उनकी मानसिक एवं हार्दिक शक्तियों को हज़रत मसीह की संगत ने कोई ऐसी विशालता प्रदान नहीं की थी जिसकी सहाबा नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुक़ाबले पर प्रशंसा हो सके अपितु हवारियों की क़दम-क़दम में कायरता, विश्वास की कमी, कृपणता, दुनिया को मांगना, बेवफ़ाई सिद्ध होती थी। परन्तु सहाबा नबी अरबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से वह श्रद्धा और वफ़ा प्रकटन में आई जिसका उदाहरण किसी दूसरे नबी के अनुयायियों में मिलना कठिन है अत: यह उस रूहानी प्रशिक्षण का जो पूर्ण तौर पर हुआ था प्रभाव था जिसने उनको पूर्णतया परिवर्तित कर के कहीं का कहीं पहुंचा दिया था। इसी प्रकार बहुत से बुद्धिमान अंग्रेज़ों ने वर्तमान समय में ऐसी पुस्तकें लिखी हैं कि जिनमें उन्होंने इक़रार कर लिया है कि यदि हम नबी अरबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हालत, ख़ुदा की ओर रुजू, तथा भरोसा, व्यक्तिगत दृढ़ता, पूर्ण शिक्षा, शुद्ध इलक़ा के प्रभाव और बहुत सी उपद्रवी जनता के सुधार और सर्वशक्तिमान ख़ुदा की बाह्य और आन्तरिक सहायताओं को इन चमत्कारों को पृथक कर के भी देखें तो जो पुस्तकों से उनके बारे में वर्णन की जातीं हैं तब भी हमारा इन्साफ़ इस इक़रार के लिए विवश करता है कि ये समस्त बातें जो उनसे प्रकटन में आई यह भी निस्सन्देह विलक्षण तथा मानवीय शक्तियों से उच्चतर हैं और सच्ची सही नुबुव्वत की पहचान करने के लिए शक्तिशाली और पर्याप्त निशान हैं। कोई इन्सान जब तक उसके साथ ख़ुदा तआला न हो कभी इन सब बातों में कामिल और सफ़ल नहीं हो सकता और न ऐसे परोक्ष के समर्थन में उसके साथ होते हैं।

तीसरे प्रश्न का उत्तर

जिन विचारों को ईसाई साहिब ने अपनी इबारत में आरोप के रूप में प्रस्तुत किया है वह वास्तव में आरोप नहीं है अपितु वह तीन बोधभ्रम हैं जो विचार की कमी के कारण उनके हृदय में पैदा हो गए हैं। नीचे हम उन बोधभ्रमों का निवारण करते हैं।

पहले बोधभ्रम के बारे में उत्तर यह है कि सच्चे नबी की यह निशानी कदापि नहीं है कि ख़ुदा तआला की तरह हर एक गुप्त बात का स्थायी तौर पर उसको ज्ञान भी हो अपितु अपने व्यक्तिगत अधिकार और अपनी व्यक्तिगत विशेषता से अन्तर्यामी होना ख़ुदा तआला के अस्तित्व की ही विशेषता है। पुरातन से अहले हक़ हज़रत वाजिबुल वुजूद के परोक्ष के ज्ञान के बारे में व्यक्तिगत अनिवार्यता की आस्था रखते हैं और दूसरी समस्त सम्भावनाओं के बारे में व्यक्तिगत निषेध और अल्लाह तआला के अनिवार्य होने की सम्भावना की आस्था है अर्थात् यह आस्था कि ख़ुदा तआला के अस्तित्व के लिए अन्तर्यामी होना अनिवार्य है और उसके सच होने की यह व्यक्तिगत विशेषता है कि अन्तर्यामी हो परन्तु सम्भावनाओं के जो घातक अस्तित्व और मिथ्या वास्तविकता है उस विशेषता में और ऐसा हो दूसरी विशेषता में अल्लाह तआला के साथ भागीदारी वैध नहीं और जैसा अस्तित्व की दृष्टि से ख़ुदा तआला का भागीदार निषेध है ऐसा ही विशेषताओं की दृष्टि से भी निषेध है अतः सम्भावनाओं के लिए उनके अस्तित्व पर दृष्टि डालते हुए अन्तर्यामी होना निषेधों में से है। चाहे नबी हो या मुहद्दिस हों, या वली हों, हाँ ख़ुदा तआला के इल्हाम से परोक्ष

के रहस्यों को मालूम करना यह हमेशा विशेष और चुने हुए पुरुषों को हिस्सा मिलता रहा है और अब भी मिलता है जिसको हम केवल आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुयायियों में पाते हैं न कि किसी और में। ख़ुदा की आदत इसी प्रकार से जारी है कि वह कभी-कभी अपने विशेष बन्दों को अपने कुछ विशेष रहस्यों पर सूचित कर देता है और निर्धारित और निश्चित समयों में उन पर परोक्ष के वरदान का टपकना होता है अपितु अल्लाह के पूर्ण सानिध्य प्राप्त इसी से आज़माए जाते हैं और पहचाने जाते हैं कि कभी भविष्य की गुप्त बातें या कुछ गुप्त रहस्य उन्हें बताये जाते हैं परन्तु यह नहीं कि उनके अधिकार, इरादे और शक्ति से अपितु ख़ुदा तआला के इरादे अधिकार और शक्ति से ये नेमतें उन्हें मिलती हैं।

वे जो उसकी इच्छा पर चलते हैं और उसी के हो रहते तथा उसी में खोये जाते हैं उस भलाई मात्र की उनसे कुछ ऐसी ही आदत है कि अधिकतर उनकी सुनता और अपना पिछला कार्य या भावी उद्देश्य कभी उन पर प्रकट कर देता है। परन्तु ख़ुदा के बताने के बिना कुछ भी मालूम नहीं होता वे यद्यपि ख़ुदा तआला के सानिध्य प्राप्त तो होते हैं परन्तु ख़ुदा तो नहीं होते समझाए समझते हैं, बतलाये जानते हैं, दिखाए देखते हैं, बुलाये बोलते हैं और अपने अस्तित्व में कुछ भी नहीं होते। जब महान शक्ति उन्हें अपने इल्हाम की प्रेरणा से बुलाती है तो वे बोलते हैं और जब दिखाती है तो देखते हैं और जब सुनाती है तो सुनते हैं तथा जब तक ख़ुदा तआला उन पर कोई गुप्त बात प्रकट नहीं करता तब तक उन्हें इस बात की कुछ भी ख़बर नहीं होती। समस्त नबियों के जीवन की परिस्थितियों में इसकी गवाही

पाई जाती है। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की ओर ही देखो कि वह क्योंकर अपनी अज्ञानता का स्वयं इक़रार कर के कहते हैं कि उस दिन और उस घड़ी के बारे में बाप के अतिरिक्त न तो फ़रिश्ते जो आसमान पर हैं, न बेटा, कोई नहीं जानता। मरक़स अध्याय 13 आयत 32 और फिर वह कहते हैं कि मैं स्वयं से कुछ नहीं करता (अर्थात् कुछ नहीं कर सकता) परन्तु जो मेरे बाप ने सिखाया वे बातें कहता हूँ। किसी को ईमानदारों की श्रेणी तक पहुँचाना मेरे अधिकार में नहीं। मुझे क्यों नेक कहता है नेक कोई नहीं परन्तु एक अर्थात् ख़ुदा।

(मरक़स अध्याय 10 आयत 18)

अतः किसी नबी ने सत्ता सम्पन्न या अन्तर्यामी होने का दावा नहीं किया। देखो उस खाकसार बन्दे की ओर जिसको मसीह करके पुकारा जाता है और जिसे नादान सृष्टि के पुजारियों ने ख़ुदा समझ रखा है कि कैसे उस ने प्रत्येक स्थान में अपने कथन और कर्म से प्रकट कर दिया कि मैं एक कमज़ोर और अशक्त बन्दा हूँ और मुझ में व्यक्तिगत तौर पर कोई भी ख़ूबी नहीं और अन्तिम इक़रार जिस पर उनका अन्त हुआ कैसा प्यारे शब्दों में है। अतः इन्जील में यों लिखा है कि वह अर्थात् मसीह (अपनी गिरफ्तारी की सूचना पा कर) घबराने और दुखी होने लगा तथा उन से (अर्थात् अपने हवारियों से) कहा कि मेरी जान का ग़म मौत का सा है और वह थोड़ा आगे जाकर ज़मीन पर गिर पड़ा (अर्थात् सज्दा किया) और दुआ मांगी कि अगर हो सके तो यह घड़ी मुझ से टल जाए और कहा कि हे अब्बा! हे बाप! सब कुछ तुझ से हो सकता है। इस प्याले को मुझ से टाल दे। अर्थात् तू सर्वशक्तिमान है और मैं कमज़ोर और असहाय बन्दा हूँ।

तेरे टालने से यह बला टल सकती है और अन्ततः ईली-ईली लिमा सबकतनी कहकर जान दी। जिसका अनुवाद यह है कि "हे मेरे ख़ुदा! हे मेरे ख़ुदा!! तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया।"

अब देखिये कि यद्यपि दुआ तो स्वीकार न हुई क्योंकि अटल प्रारब्ध (तक़्दीर मुबरम) था। एक दरिद्र सृष्टि के स्त्रष्टा के अटल इरादे के आगे क्या पेश जाती थी। परन्तु हज़रत मसीह ने अपनी विनय और बन्दगी के इक़रार को अन्त तक पहुंचा दिया। इस आशा से कि शायद स्वीकार हो जाए। यदि उन्हें पहले से ज्ञान होता कि दुआ अस्वीकार की जाएगी कदापि स्वीकार नहीं होगी तो वह पूरी रात निरंतर फ़ज्र तक अपने बचाव के लिए क्यों दुआ करते रहते और क्यों स्वयं को तथा अपने हवारियों को भी प्रतिबंध से इस व्यर्थ परिश्रम में डालते।

अतः ऐतिराज़ करने वाले के कथनानुसार उनके दिल में यही था कि अंजाम ख़ुदा को मालूम है मुझे मालूम नहीं। फिर ऐसा ही हज़रत मसीह की कुछ भविष्यवाणियों का सही न निकलना वास्तव में इसी कारण से था कि गुप्त रहस्यों से अज्ञानता के कारण विवेचना के तौर पर व्याख्या करने में उनसे ग़लती हो जाती थी जैसा कि आप ने फ़रमाया था कि जब नए रूप में इब्ने आदम अपने प्रताप के तख़्त पर बैठेगा तुम भी (हे मेरे बारह हवारियो) बारह तख़्तों पर बैठोगे। देखो मती अध्याय 20 आयत 28

किन्तु इसी इन्जील से प्रकट है कि यहूदा इस्क्रियूती इस तख़्त से वंचित रह गए। उसके कानों ने तख़्त पर बैठने की ख़बर सुन ली परन्तु उसे तख़्त पर बैठना प्राप्त न हुआ। अब ईमानदारी और सच्चाई से यह प्रश्न पैदा होता है कि यदि हज़रत मसीह को इस व्यक्ति के

मुर्तद और बुरी आख़िरत होने का पहले से ज्ञान होता तो क्यों उसको तख़्त पर बैठने की झूठी ख़ुशख़बरी सुनाते। ऐसा ही एक बार आप अंजीर का एक वृक्ष दूर से देखकर अंजीर खाने की नीयत से उसकी ओर गए परन्तु जा कर जो देखा तो मालूम हुआ कि उस पर एक भी अंजीर नहीं तो आप बहुत नाराज़ हुए और क्रोध की हालत में उस अंजीर को बद्दुआ (श्राप) दी जिसका कोई दुष्प्रभाव अंजीर पर प्रकट न हुआ। यदि आप को कुछ परोक्ष का ज्ञान होता तो फल रहित वृक्ष की ओर उसका फल खाने के इरादे से क्यों जाते।

ऐसा ही एक बार आपके दामन को एक औरत ने छुआ था तो आप चारों ओर पूछने लगे कि मेरा दामन किस ने छुआ है? अगर कुछ परोक्ष के ज्ञान से हिस्सा होता तो दामन छूने वाले का पता मालूम करना तो कुछ बड़ी बात न थी। एक और बार आपने यह भविष्यवाणी भी की थी कि इस युग के लोग गुज़र न जायेंगे जब तक यह सब कुछ (अर्थात् मसीह का दोबारा दुनिया में आना और सितारों का गिरना इत्यादि) न हो परन्तु स्पष्ट है कि न उस युग में कोई सितारा आसमान का पृथ्वी पर गिरा और न हज़रत मसीह अदालत के लिए दुनिया में आए और वह सदी तो क्या उस पर अठारह सदियां और भी गुज़र गईं और उन्नीसवीं गुजरने के क़रीब है। अतः हज़रत मसीह के ग़ैब के ज्ञान से अनभिज्ञ होने के लिए यही कुछ गवाहियाँ पर्याप्त हैं जो किसी और किताब से नहीं अपितु चारों इन्जीलों से देख कर हमने लिखीं हैं दूसरे इस्राईली नबियों का भी यही हाल है। हज़रत याकूब नबी ही थे परन्तु उन्हें कुछ ख़बर न हुई कि उसी गाँव के बियाबान में मेरे बेटे पर क्या गुज़र रही है। हज़रत दानियाल उस अवधि की

ख़ुदा तआला ने बुख़्त नसर के स्वप्न की उन पर ताबीर खोल दी कुछ भी ज्ञान नहीं रखते थे कि स्वप्न क्या है और उसकी ताबीर क्या है?

अतः इस समस्त अनुसंधान से स्पष्ट है कि नबी का यह कहना कि यह बात ख़ुदा को मालूम है मुझे मालूम नहीं बिलकुल सच और अपने स्थान पर चरितार्थ तथा सर्वथा उस नबी का सम्मान और उसका अब्द (बन्दा) होने का गर्व है अपितु इन बातों से अपने कृपालु आक़ा के आगे उसकी शान बढ़ती है न यह कि उसके नुबुव्वत के पद में कुछ विकार अनिवार्य आता है। हाँ यदि यह अनुसंधान स्वीकार हो कि ख़ुदा तआला के बताने से जो ग़ैब के रहस्य प्राप्त होते हैं वे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कितने हुए तो मैं इस बात का एक बड़ा सबूत प्रस्तुत करने के लिए तैयार हूँ कि तौरात इन्जील और समस्त बाइबल में नबियों की जितनी भविष्यवाणियाँ लिखी हैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणियाँ संख्या तथा गुणवत्ता उन से हज़ार गुना से भी अधिक हैं जिन का विवरण नबवी हदीसों की दृष्टि से जो बड़ी छान-बीन से लिखी गई हैं मालूम होती है और संक्षिप्त तौर पर परन्तु पर्याप्त और संतोषजनक तथा नितांत प्रभावी वर्णन पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है। फिर अन्य धर्मावलम्बियों की तरह मुसलमानों के हाथ में केवल किस्सा ही नहीं अपितु वह तो हर सदी में ग़ैर क़ौमों को कहते रहे हैं और अब भी कहते हैं कि यह सब इस्लाम की बरकतें हैं हमेशा के लिए मौजूद हैं। भाइयो! आओ पहले आज़माओ फिर स्वीकार करो। परन्तु इन आवाजों को कोई नहीं सुनता। ख़ुदा तआला की हुज्जत उन पर पूरी है कि हम बुलाते हैं वे नहीं आते और हम दिखाते हैं वे नहीं देखते।

उन्होंने आँखों को कानों को पूर्णतया हम से फेर लिया ताकि न हो कि वे सुनें और देखें और हिदायत पायें।

दूसरा बोधभ्रम जो ऐतिराज़ करने वाले ने प्रस्तुत किया है अर्थात् यह कि असहाब-ए-क़हफ़ की संख्या के बारे में पवित्र क़ुर्आन में ग़लत वर्णन है यह निरा दावा है। ऐतिराज़ कर्ता ने इस बारे में कुछ नहीं लिखा कि वह वर्णन क्यों ग़लत है और उसके मुकाबले पर सही वर्णन कौन सा और उसके सही होने पर कौन से तर्क हैं ताकि उसके तर्कों पर विचार किया जाए और संतोषजनक उत्तर दिया जाए। यदि ऐतिराज़ कर्ता को क़ुर्आन के वर्णन पर कुछ आपत्ति थी तो उसके कारण प्रस्तुत करने चाहिए थे। कारण प्रस्तुत करने के बिना यों ही ग़लत ठहराना सत्याभिलाषी का कार्य नहीं है।

तीसरा बोधभ्रम ऐतिराज़ कर्ता के हृदय में यह पैदा हुआ है कि पवित्र क़ुर्आन में लिखा है कि एक बादशाह (जिसके भ्रमण का वर्णन पवित्र क़ुर्आन में है।) भ्रमण करता-करता किसी ऐसे स्थान तक पहुंचा जहाँ उसे सूर्य दलदल में अस्त होता दिखाई दिया। अब ईसाई साहिब अवास्तविक से वास्तविक की ओर ध्यान देकर यह ऐतिराज़ करते हैं कि सूर्य इतना बड़ा होकर एक छोटे से दलदल में क्योंकर छुप गया। यह ऐसी बात है कि जैसे कोई कहे कि इन्जील में मसीह को ख़ुदा का बर्रा लिखा है यह क्योंकर हो सकता है। बर्रा तो वह होता है जिसके सर पर सींग और शरीर पर ऊन इत्यादि भी हो और चारपायों की तरह सर झुका कर चलता और वे वस्तुएं खाता हो जो बर्रे खाया करते हैं? हे साहिब! आप ने कहाँ से और किस से सुन लिया कि पवित्र क़ुर्आन ने वास्तविक तौर पर सूर्य के दलदल में छुपने

का दावा किया है। पवित्र क़ुर्आन तो केवल विचार की नक़ल के तौर पर इतना कहता है कि उस व्यक्ति को उसकी दृष्टि में दलदल में सूर्य छुपता हुआ मालूम हुआ अतः यह तो एक व्यक्ति के देखने का हाल वर्णन किया गया है कि वह ऐसे स्थान पर पहुंचा जिस स्थान पर सूर्य किसी पहाड़ या आबादी व वृक्षों की ओट में छुपता नज़र नहीं आता था जैसा कि सामान्य नियम है अपितु दलदल में छुपता हुआ मालूम होता था। निष्कर्ष यह कि उस स्थान पर कोई आबादी, वृक्ष या पहाड़ क़रीब न थे अपितु जहाँ तक दृष्टि वफ़ा करे उन वस्तुओं में से किसी वस्तु का निशान दिखाई नहीं देता था केवल एक दलदल था जिसमें सूर्य छुपता दिखाई देता था।

इन आयतों का अगला पिछला प्रसंग देखो कि इस स्थान पर दूरदर्शिता पूर्ण अनुसंधान का कुछ वर्णन भी है केवल एक व्यक्ति के लम्बे भ्रमण का वर्णन है और इन बातों के वर्णन करने से इसी अर्थ का सिद्ध करना अभीष्ट है कि वह ऐसे ग़ैर आबाद स्थान पर पहुंचा। तो इस स्थान पर भौतिकी की समस्याएं ले बैठना बिलकुल बे मौक़ा नहीं तो और क्या है? उदाहरणतया यदि कोई कहे कि आज रात बादल इत्यादि से आकाश ख़ूब साफ़ हो गया था और सितारे आकाश के बिन्दुओं की तरह चमकते हुए दिखाई देते थे तो इस से यह झगड़ा ले बैठें कि क्या सितारे बिन्दुओं के समान हैं और भौतिकी की पुस्तकें खोल-खोल कर प्रस्तुत करें तो निस्सन्देह यह हरकत अनभिज्ञ की सी हरकत होगी क्योंकि उस समय बात करने वाले की नीयत में वास्तविक बात का वर्णन करना अभीष्ट नहीं वह तो केवल अवास्तविक तौर पर जिस प्रकार समस्त संसार बोलता है बात कर

रहा है। हे वे लोगों जो इशा-ए-रब्बानी में मसीह का लहू पीते और गोश्त खाते हो क्या अभी तक तुम्हें मजाज़ात (अवास्तविकताओं) तथा रूपकों का ज्ञान नहीं? सब जानते हैं कि प्रत्येक देश की सामान्य बोल-चाल में अवास्तविकताओं और रूपकों के प्रयोग का अत्यन्त विशाल द्वार खुला है और ख़ुदा तआला की वह्यी उन्हीं मुहावरों और रूपकों को जो सादगी से जन सामान्य ने अपनी दैनिक बातचीत और बोल-चाल में ग्रहण कर रखे हैं। दर्शनशास्त्र की बारीक परिभाषाओं का हर स्थान और हर महल में अनुकरण करना वह्यी की पद्धति नहीं क्योंकि बात का मुख जन सामान्य की ओर है। अत: अवश्य है कि उनकी समझ के अनुसार और उनके मुहावरों की दृष्टि से बात की जाए वास्तविकताओं और सूक्ष्म बातों का वर्णन करना स्वयं है परन्तु मुहावरों का छोड़ना तथा अवास्तविकताओं और सामान्य रूपकों से सहसा पृथक होना ऐसे व्यक्ति के लिए कदापि वैध नहीं जो जन सामान्य से मज़ाक पर बात करना उसके पद का कर्त्तव्य है ताकि वह उसकी बात को समझें और उनके दिलों पर उसका प्रभाव हो। इसलिए यह मान्य है कि कोई ऐसी इल्हामी किताब नहीं जिसमें अवास्तविकताओं और रूपकों से पृथकता की गई हो या पृथक होना वैध हो। क्या ख़ुदा तआला का कोई कलाम दुनिया में ऐसा भी आया है? यदि हम विचार करें तो हम स्वयं अपनी दैनिक बोल-चाल में सैकड़ों अवास्तविक बातें और रूपक बोल जाते हैं और कोई भी उन पर ऐतिराज़ नहीं करता। उदाहरणतया कहा जाता है कि हिलाल बाल सा बारीक है और सितारे बिन्दुओं की तरह है या चाँद बादल के अन्दर छुप गया और सूर्य अभी तक जो एक पहर दिन चढ़ा है नेज़ा

(भाला) भर ऊपर आया है या हम ने एक प्लेट पुलाव की खाई या एक प्याला शर्बत का पी लिया। तो इन सब बातों में किसी के दिल में यह धड़का शुरू नहीं होता कि हिलाल क्योंकर बाल सा बारीक हो सकता है और क्या सूर्य ने अपनी उस तीव्र गति के बावजूद जिस से वह हज़ारों कोस एक दिन में तय करता है एक पहर में केवल नेज़े के बराबर इतनी दूरी करता है और न पुलाव की प्लेट खाने या शरबत का प्याला यह कोई सोच सकता है कि प्लेट या प्याले को टुकड़े-टुकड़े कर के खा लिया होगा। अपितु यह समझेंगे कि जो उनके अन्दर चावल और पानी है वही खाया-पिया होगा। अत्यन्त स्पष्ट बात पर ऐतिराज़ करना कोई बुद्धिमान विरोधी भी पसंद नहीं करता। न्यायप्रिय ईसाइयों से हमने स्वयं सुना है कि ऐसे-ऐसे ऐतिराज़ हम में से वे लोग करते हैं जो अनभिज्ञ या कट्टर पक्षपाती हैं।

भला यह क्या सत्य आचरण है? कि यदि ख़ुदा के कलाम में मजाज़ या रूपक के रंग पर कुछ आए तो उस वर्णन को वास्तविकता पर चरितार्थ कर के ऐतिराज़ का स्थान बनाया जाए। इस स्थिति में कोई इल्हामी किताब भी ऐतिराज़ से नहीं बच सकती। जहाज़ में बैठने वाले और अग्निबोट पर सवार होने वाले प्रतिदिन यह तमाशा देखते हैं कि सूर्य पानी में से ही निकलता है और पानी में ही अस्त होता है तथा सैकड़ों बार आपस में जैसा कि देखते हैं बोलते भी हैं कि वह निकला और वह अस्त हुआ। अब स्पष्ट है कि इस बोल-चाल के समय में भौतिक शास्त्र के दफ्तर उनके आगे खोलना और सूर्य की व्यवस्था की समस्या ले बैठना जैसे यह उत्तर सुनना है कि हे पागल! क्या यह ज्ञान तुझे ही मालूम है हमें मालूम नहीं।

ईसाई साहिब ने पवित्र क़ुर्आन पर ऐतिराज़ किया परन्तु इन्जील के वे स्थान जिन पर निश्चित और वास्तविक ऐतिराज़ होता है भूले रहे। उदाहरणतया बतौर नमूना देखो कि इन्जील मती व मरक़स में लिखा है कि मसीह को उस समय आसमान से अल्लाह की प्रजा की अदालत के लिए उतरता देखोगे जब सूर्य अन्धकारमय हो जायेगा और चन्द्रमा अपना प्रकाश नहीं देगा तथा सितारे आकाश से गिर जायेंगे। अब भौतिकी का ज्ञान ही यह आपत्तियां प्रस्तुत करता है कि क्योंकर संभव है कि समस्त सितारे पृथ्वी पर गिरें और सब टुकड़े-टुकड़े होकर पृथ्वी के किसी कोने में जाकर गिर पड़ें और बनी आदम को उनके गिरने से कुछ भी हानि या कष्ट न पहुंचे और सब ज़िन्दा और सुरक्षित रह जाएँ हालाँकि एक सितारे का गिरना भी पृथ्वी निवासियों की तबाही के लिए पर्याप्त है फिर यह बात भी विचारनीय है कि जब सितारे पृथ्वी पर गिर कर पृथ्वी वालों को उनके अस्तित्व से बे निशान समाप्त करेंगे तो मसीह का यह कथन कि तुम मुझे बादलों में आकाश से उतरता देखोगे क्योंकर सही होगा? जब लोग हज़ारों सितारों के नीचे दबे मरे पड़े होंगे तो मसीह का उतरना कौन देखेगा? और पृथ्वी जो सितारों के आकर्षण से खड़ी और यथावत है क्योंकर अपनी सही हालत पर स्थापित और खड़ी कैसे रहेगी और मसीह किन चुने हुए लोगों को (जैसा कि इन्जील में है) दूर-दूर से बुलाएगा और किन को डांट-डपट और चेतावनी देगा क्योंकि सितारों का गिरना तो स्पष्ट तौर पर सामान्य फ़ना और सामान्य मौत के लिए अनिवार्य है अपितु पृथ्वी के तख़्ते के इन्किलाब का कारण होगा। अब देखिये कि यह सब वर्णन भौतिक शास्त्र के विपरीत हैं या नहीं? ऐसा ही एक और

ऐतिराज़ भौतिक शास्त्र की दृष्टि से इन्जील पर होता है और वह यह है कि इन्जील मती में देखो वह सितारा जो उन्होंने (अर्थात् अग्निपूजकों ने) पूरब में देखा था उनके आगे-आगे चल रहा और उस स्थान के ऊपर जहाँ वह लड़का था जाकर ठहरा (मती अध्याय 2 आयत 9)

अब ईसाई साहिबान कृपा कर के बताएं कि भौतिक शास्त्र की दृष्टि से इस अद्भुत सितारे का क्या नाम है जो मजूसियों के क़दम से क़दम मिलाकर उनके साथ-साथ चला था और यह किस प्रकार की हरकत और किन नियमों की दृष्टि से मान्य सबूत है? मुझे मालूम नहीं कि इन्जील मती ऐसे सितारे के बारे में भौतिक शास्त्र वालों से कैसे पीछा छुड़ा सकती है। कुछ लोग तंग आकर यह उत्तर देते हैं कि यह मसीह का कथन नहीं मती का कथन है। मती के कथन को हम इल्हामी नहीं जानते। यह अच्छा उत्तर है जिससे इन्जील के इल्हामी होने की भली-भांति कलई खुल गई और मैं बतौर कमी करते हुए कहता हूँ कि कि जैसे मसीह का कथन नहीं मती या किसी अन्य का कथन है परन्तु मसीह का कथन भी तो (जिसको इल्हामी माना गया है और जिस पर अभी हमारी ओर से आपत्ति हो चुकी है) उसी का समरंग और समरूप है थोड़ा उसी को भौतिकी के नियम से अनुकूल कर के दिखालाइए तथा यह भी याद रहे कि यह कथन इल्हामी नही अपितु मनुष्य की ओर से इन्जील में मिलाया गया है तो फिर आप लोग उन इन्जीलों को जो आप के हाथ में हैं समस्त वर्णनों की दृष्टि से इल्हामी क्यों कहते हो? स्पष्ट तौर पर क्यों प्रसिद्ध नहीं कर देते कि उन कुछ बातों के अतिरिक्त जो हज़रत मसीह के मुंह से निकलीं हैं शेष जो कुछ इन्जीलों में लिखा है वह लेखकों ने केवल अपने

विचार, अपनी बुद्धि तथा विवेक के अनुसार लिखा है, जो गलतियों से पवित्र नहीं समझा जा सकता। जैसा कि पादरी लोगों के सामान्य लेखों से मुझे मालूम हुआ है कि यह राय सामान्य तौर पर प्रसिद्ध ही की गई है अर्थात् इन्जीलों की पूर्ण सहमति के बारे में यह स्वीकार कर लिया गया है कि जो कुछ ऐतिहासिक तौर पर चमत्कारों इत्यादि का वर्णन उनमें पाया जाता है वह कोई इल्हामी बात नहीं अपितु इन्जील के लेखकों ने अपने अनुमान या सुनने इत्यादि बाह्य साधनों से लिख दिया है। तो पादरी सज्जनों ने इस इक़रार से उन बहुत से आक्रमणों से जो इन्जीलों पर होते हैं अपना पीछा छुड़ाना चाहां है और प्रत्येक इंजील में लगभग दस भाग मनुष्य का कलाम और एक भाग ख़ुदा तआला का कलाम मान लिया है और इन इक़रारों के कारण जो-जो हानि उन्हें उठानी पड़ीं उनमें से एक यह भी है कि ईसवी चमत्कार उनके हाथ से गए और उनके पास उनका कोई सन्तोषजनक और पर्याप्त सबूत न रहा, क्योंकि यद्यपि इन्जील के लेखकों ने ऐतिहासिक तौर पर केवल अपनी ओर से मसीह के चमत्कार इन्जीलों में लिखे हैं परन्तु मसीह का अपना शुद्ध वर्णन जो इल्हामी कहलाता है हवारियों के वर्णन से सर्वथा विपरीत और विरुद्ध मालूम होता है। अपितु उसका उल्टा और विपरीत है। कारण यह कि मसीह ने अपने वर्णन में जिसको इल्हामी कहा जाता है जगह-जगह चमत्कारों के दिखाने से इन्कार ही किया है और चमत्कारों के मांगने वालों को साफ़ उत्तर दे दिया है कि तुम्हें कोई चमत्कार नहीं दिखाया जाएगा। अतः हीरोदेस ने भी मसीह से चमत्कार माँगा तो उसने न दिखाया और बहुत से लोगों ने उसके निशान देखने चाहे और निशानों के बारे में उस से

प्रश्न भी किया परन्तु वह साफ़ इन्कारी हो गया और कोई निशान दिखा न सका अपितु उसने पूरी रात जाग कर ख़ुदा तआला से यह निशान माँगा कि वह यहूदियों के हाथ से सुरक्षित रहे तो यह निशान भी उसको न मिला और दुआ अस्वीकार की गई। फिर मस्लूब होने के बाद यहूदियों ने सच्चे दिल से कहा कि यदि अब वह सलीब पर से ज़िन्दा होकर उतर आए तो हम सब के सब उस पर ईमान ले आएँगे परन्तु वह उतर ही न सका। अतः इन समस्त घटनाओं से साफ़ प्रकट है कि जहाँ तक इन्जीलों में इल्हामी वाक्य हैं वे मसीह को साहिब-ए-चमत्कार होने से स्पष्ट उत्तर दे रहे हैं और यदि कोई ऐसा वाक्य भी है कि जिसमें मसीह के साहिब-ए-चमत्कार होने के बारे में कुछ विचार कर सकें तो वास्तव में वह वाक्य बहुमुखी है जिसके और और मायने भी हो सकते हैं। कुछ आवश्यक मालूम नहीं होता कि उसको प्रत्यक्ष पर ही चरितार्थ किया जाए या अकारण खींच-तान कर के उन चमत्कारों का ही चरितार्थ ठहराया जाए जिनका इंजील के लेखकों ने अपनी ओर से वर्णन किया है तथा कोई विशेष वाक्य हज़रत मसीह की जीभ से निकला हुआ ऐसा नहीं कि जो गहतना और चमत्कारों के सबूत पर स्पष्ट तौर पर सिद्ध करता हो अपितु मसीह के विशेष और ज़ोरदार वाक्यों का इसी बात पर तर्क पाया जाता है कि उनसे एक भी चमत्कार प्रकटन में नहीं आया★ आश्चर्य कि ईसाई

★**हाशिया :-** पवित्र क़ुर्आन में केवल उस मसीह के चमत्कारों का सत्यापन है जिसने कभी ख़ुदाई का दावा नहीं किया क्योंकि मसीह कई हुए हैं और होंगे और फिर क़ुर्आनी सत्यापन बहुमुखी हैं जो इंजील के लेखकों के वर्णन का कदापि सत्यापन कर्ता नहीं। इसी से।

लोग क्यों उन बातों पर भरोसा और विश्वास नहीं करते जो मसीह का विशेष वर्णन और इल्हामी कहलाती हैं और विशेष तौर पर मसीह के मुंह से निकली हैं? और बातों पर क्यों विश्वास किया जाता है और क्यों उनके महत्त्व से अधिक उन पर बल दिया जाता है जो ईसाइयों के अपने इक़रार के अनुसार इल्हामी नहीं हैं अपितु ऐतिहासिक तौर पर इन्जीलों में दाखिल हैं और इल्हाम के सिलसिले से पूर्णतया बाहर हैं तथा इल्हामी इबारतों से उनका पूर्णतया विरोधाभास पाया जाता है। तो जब इल्हामी और ग़ैर इल्हामी इबारतों में विरोधाभास हो तो उसे दूर करने के लिए इसके अतिरिक्त और क्या उपाय है कि जो इबारतें इल्हामी नहीं हैं वे अविश्वसनीय समझी जाएँ और केवल इन्जील के लेखकों की अतिशियोंक्तियों पर विश्वास न किए जाएँ? अतः जगह-जगह उनकी अतिश्योक्ति करना प्रकट भी है जैसा की युहन्ना की इन्जील की अंतिम आयत जिस पर वह पवित्र इंजील समाप्त की गई है यह है – "पर और भी बहुत से काम हैं जो यसू ने किए और यदि वे पृथक-पृथक लिखे जाते तो मैं गुमान करता हूँ कि किताबें जो लिखीं जातीं दुनिया में न समा सकतीं।" देखो कितनी अतिश्योक्ति है कि पृथ्वी और आकाश के चमत्कार तो दुनिया में समा गए परन्तु मसीह का तीन या ढाई वर्ष का जीवन चरित्र दुनिया में समा नहीं सकता ऐसे अतिश्योक्ति करने वाले लोगों की रिवायत पर क्योंकर विश्वास कर लिया जाए।

हिन्दुओं ने भी अपने अवतारों के बारे में ऐसी ही पुस्तकें लिखी थीं और इसी प्रकार खूब जोड़-जोड़ से मिला कर झूठ का पुल बाँधा था। अतः इस क़ौम पर भी इस इफ़्तिरा का अत्यन्त दृढ़

प्रभाव पड़ा और इस सिरे से देश के उस सिरे तक राम-राम और कृष्ण-कृष्ण हृदयों में रच गया। बात यह है कि सम्पादित पुस्तकें जिनमें बहुत सा इफ़्तिरा भरा हुआ हो उन क़ब्रों की तरह होती हैं जो बाहर से ख़ूब सफ़ेद की जाएँ और चमकाई जाएँ परन्तु अन्दर कुछ न हो। अन्दर का हाल उन अनभिज्ञ लोगों को क्या मालूम हो सकता है जो सैकड़ों वर्षों के बाद पैदा हुए और बनी-बनाई पुस्तकें ऐसी बरकत वाली और निस्वार्थ प्रकट करके उनको दी गईं कि जैसे वे किसी रूप और बनावट के साथ आकाश से उतरी हैं। तो वह क्या जानते हैं कि वास्तव में यह संग्रह किस प्रकार तैयार किया गया है? दुनिया में ऐसी तेज़ निगाहें जो पर्दों को चीरती हुई अन्दर घुस जाएँ और असल वास्तविकता पर सूचना पा लें और चोर को पकड़ लें बहुत कम हैं और इफ़्तिरा के जादू से प्रभावित होने वाली रूहें इतनी हैं जिनका अनुमान करना कठिन है। इसी कारण से एक संसार तबाह हो गया और होता जाता है। मूर्खों ने सबूत या सबूत न होने के ज़रूरी मामले पर कुछ भी विचार नहीं किया और मानवीय योजनाओं तथा प्रतिबंधों का जो एक निरन्तर तरीक़ा तथा स्वाभाविक बात है जो मानव जाति में सदैव से चली आती है उस से चौकस रहना नहीं चाहा और यों ही शैतानी जाल को स्वयं पर ले लिया। छल करने वालों ने उस दुष्ट कीमियागर की तरह जो एक सरल स्वभाव व्यक्ति से हज़ार रुपया नक़द लेकर दस-बीस लाख का सोना बना देने का वादा करता है सच्चा और पवित्र ईमान मूर्खों का खोया हुआ तह एक झूठी ईमानदारी और झूठी बरकतों का वादा दिया जिनका बाहर में कुछ भी अस्तित्व नहीं और न कुछ सबूत।

अत: चपलताओं में, छल प्रपंचों में, दुनिया के पुजारियों में, तामसिक वृत्ति में उनको स्वयं से अधिक निकृष्ट कर दिया। अन्तत: यह नुक्ता स्मरण रखने योग्य है कि चमत्कारों को तथा भविष्यवाणियों के बारे में जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से घटित हुईं पवित्र क़ुर्आन की एक मात्र गवाही, इन्जीलों के एक बड़े ढेर से जो मसीह के चमत्कार इत्यादि के बारे में हो हज़ारों गुना बढ़कर है क्यों बढ़कर है? इसी कारण से कि स्वयं समस्त अन्वेषक पादरियों के इक़रार से इन्जीलों का वर्णन स्वयं हवारियों का अपना ही कलाम है और फिर अपना चश्मदीद भी नहीं और न रावियों का कोई सिलसिला प्रस्तुत किया है और न कहीं व्यक्तिगत अवलोकन का दावा किया। परन्तु पवित्र क़ुर्आन में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चमत्कारों के बारे में जो कुछ लिखा गया है वह सच्चे और पवित्र विशेष ख़ुदा की पवित्र गवाही है। यदि वह केवल एक ही आयत होती तब भी पर्याप्त होती। परन्तु अल्हम्दुलिल्लाह कि इन गवाहियों से सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन भरा पड़ा है। अब तुलना करना चाहिए कि कहाँ ख़ुदा तआला की पवित्र गवाही जिसमें झूठ संभव नहीं और कहीं जानबूझ कर झूठ और अतिश्योक्तिपूर्ण गवाहियाँ। --

به نزدیک دانائے بیدار دل　　　جوئے سیم بہتر زِ صد تودۂ گِل

झूठ गढ़ी हुई बातों पर क्यों आश्चर्य करना चाहिए। ऐसा बहुत कुछ हुआ है और होता है। ईसाइयों को स्वयं इक़रार है कि हम में से बहुत से लोग प्रारंभिक युगों में अपनी ओर से किताबें बना कर और बहुत कुछ अपने बुज़ुर्गों की खूबियाँ उनमें लिखकर फिर ख़ुदा तआला की ओर उनको सम्बद्ध करते रहे हैं और दावा कर दिया

जाता है कि वे किताबें ख़ुदा तआला की ओर से हैं★ अतः जबकि ईसाइयों और यहूदियों की पुरानी आदत यही जालसाज़ी चली आई है तो फिर कोई कारण मालूम नहीं होता कि मती इत्यादि इन्जीलों को इस आदत से क्यों बाहर रखा जाए? हालाँकि उस साहूकार की तरह जिसका रोज़नामचा और बहीखाता स्पष्ट विरोधाभास और संदेहों के कारण गुप्त हाल को प्रकट कर रहा हो। हर चार इन्जीलों से वह कारिस्तानी प्रकट हो रही है जिसको उन्होंने छुपाना चाहा था। इसी कारण से यूरोप और अमरीका में विचारकों की तबीयतों में संदेहों का एक तूफ़ान पैदा हो गया है और जिस अपूर्ण तथा परिवर्तित और साक्षात् ख़ुदा की ओर इन्जील मार्गदर्शन कर रही है उसके

★हाशिया :- जो कुछ इन्जीलों में अवैध तथा सबूतहीन अतिशियोक्ति हज़रत मसीह के चमत्कारों के बारे में या उनकी अनावश्यक प्रशंसाओं के बारे में पाई जाती है उसकी छान-बीन करना कठिन है कि यह बातें इन्जीलों में कब और किस समय मिलाई गई हैं। यद्यपि ईसाइयों को इक़रार है कि स्वयं इन्जील लेखकों ने ये बातें अपनी ओर से मिला दी हैं परन्तु इस खाकसार की समझ में यह हाशिये धीरे-धीरे चढ़े हैं। और जालसाज़ मक्कार पीछे से बहुत कुछ अवसर पाते रहे हैं। हाँ स्थाई तौर पर कई जाली किताबें जो इल्हामी होने के नाम से प्रसिद्ध हो गईं मसीही लोगों और यहूदियों ने प्रारंभिक दिनों में ही लिख कर प्रकाशित कर दी थीं। अतः इसी जालसाज़ी की बरकत से एक इन्जील के स्थान पर बहुत सी इन्जीलें प्रकाशित हो गईं। ईसाइयों का स्वयं यह बयान है कि मसीह के बाद कई जाली इन्जीलें कई लिखी गईं जैसा कि उन सब में से एक इन्जील बरनबास भी है। यह तो ईसाइयों का बयान है। परन्तु मैं कहता हूँ कि चूँकि उन इन्जीलों और प्रचलित चारों इन्जीलों में बहुत कुछ विरोधाभास है यहाँ तक कि बरनबास की इन्जील मसीह के मस्लूब होने से भी इन्कारी तथा तसलीस के विषय की भी विरोधी और मसीह की ख़ुदाई और बेटा होने को भी

स्वीकार करने से वे नास्तिक रहना अधिक पसन्द करते हैं। अतः मेरे एक दोस्त अंग्रेज़ विद्वान ने अमरीका से अपने कई पत्रों द्वारा मुझे सूचना दी है कि इन देशों में बुद्धिमानों में से कोई भी ऐसा नहीं कि ईसाई धर्म को दोष से रिक्त समझता हो और इस्लाम के स्वीकार

शेष हाशिया - नहीं मानती और अंतिम युग के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने की स्पष्ट शब्दों में ख़ुशख़बरी देती है। तो अब ईसाइयों के इस तर्कहीन दावे को क्योंकर मान लिया जाए कि जिन इन्जीलों को उन्होंने रिवाज दिया है वे तो सच्ची हैं और जो उनके विपरीत हैं वे सब झूठी हैं। इसके अतिरिक्त जबकि ईसाइयों में जालसाज़ी की इतनी गर्म बाज़ारी रही है कि कुछ कामिल उस्तादों ने पूरी-पूरी इन्जीलें भी अपनी ओर से बना कर सामान्य तौर पर उन्हें क़ौम में प्रकाशित कर दिया और परों पर एक कण भर पानी पड़ने न दिया। तो किसी किताब का अक्षांतरित एवं परिवर्तित करना उनके आगे क्या वास्तविकता थी। फिर जबकि यह भी स्वीकार कर लिया गया है कि मसीह के युग में ये इन्जीलें नहीं लिखी गईं अपितु मसीह के मृत्यु पाने के पचास या साठ वर्ष के पश्चात या कुछ न्यूनाधिक या चारों इन्जीलों की रिवायत में मतभेद का संग्रह दुनिया में पैदा हुआ तो उस से इन इन्जीलों के बारे में और भी सन्देह पैदा होता है। क्योंकि इस बात का सबूत देना कठिन है कि इस अवधि तक हवारी ज़िन्दा रहे हों या उनकी शक्तियाँ स्थापित रही हों। अब हम सब किस्सों को संक्षिप्त कर के पाठकों को यह बताना चाहते हैं कि इस बात का ईसाइयों ने सफ़ाई से कदापि सबूत नहीं दिया कि बारह इन्जीलें जाली और चार जिनको रिवाज दे रहे हैं जाली और अक्षांतरण से पवित्र हैं अपितु वे उन चारों के बारे में स्वयं इक़रार करते हैं कि वे ख़ुदा तआला का शुद्ध कलाम नहीं और यदि वे ऐसा इक़रार न भी करते तब भी इन्जीलों के संदिग्ध होने में कुछ भी सन्देह नहीं था क्योंकि इस बात का सबूत का भार उनके ज़िम्मे है। जिस से आज तक वे भारमुक्त नहीं हो सके कि क्यों दूसरी इन्जीलें जाली और यह जाली नहीं।

करने के लिए तैयार न हो। यदि ईसाइयों ने पवित्र क़ुर्आन के अनुवाद अक्षान्तरित और कुरूप कर के यूरोप और अमरीका के देशों में प्रकाशित किए हैं परन्तु उनके अन्दर जो प्रकाश छुपा हुआ है वह पवित्र हृदयों पर अपना काम कर रहा है। अतः अमरीका और यूरोप आजकल एक जोश की हालत में हैं और इन्जील की आस्थाओं में जो वास्तविकता के विरुद्ध हैं उन्हें बड़ी घबराहट में डाल दिया है यहाँ तक कि कुछ लोगों ने यह राय व्यक्त की कि मसीह या ईसा नाम (का) बाहर में कोई व्यक्ति कभी पैदा नहीं हुआ अपितु इस से सूर्य अभिप्राय है और बारह हवारियों से बारह बुर्ज अभिप्राय हैं। और फिर इस ईसाई धर्म की वास्तविकता अधिकतर इस बात से खुलती है कि जिन निशानियों को हज़रत मसीह ईमानदारों के लिए ठहरा गए थे उनमें से एक भी इन लोगों में नहीं पाई जाती। हज़रत मसीह ने फ़रमाया था कि यदि तुम मेरा अनुकरण करोगे तो प्रत्येक प्रकार की बरकत और स्वीकारिता में मेरा ही रूप बन जाओगे तथा चमत्कार और स्वीकारिता के निशान तुम को दिए जाएंगे और तुम्हारे मोमिन होने की यही निशानी होगी कि तुम भिन्न-भिन्न प्रकार के निशान दिखा सकोगे और जो चाहोगे तुम्हारे लिए वही होगा। और कोई बात तुम्हारे लिए असंभव नहीं होगी। परन्तु ईसाइयों के हाथ में इन बरकतों में से कुछ भी नहीं। वे उस ख़ुदा से अपरिचित मात्र हैं जो अपने विशेष बन्दों की दुआएं सुनता है और उन्हें आमने-सामने प्रेम और दया का उत्तर देता है तथा उनके लिए विचित्र-विचित्र काम दिखता है परन्तु सच्चे मुसलमान जो उन ईमानदारों के स्थानापन्न और वारिस हैं जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं वे उस ख़ुदा को

पहचानते और उसकी दया के निशानों को देखते हैं। और अपने विरोधियों के सामने सूर्य के समान जो अंधकार के सामने हो पृथकता रखते हैं। हम बार-बार लिख चुके हैं कि इस दावे को तर्कहीन नहीं समझना चाहिए सच्चे और झूठे धर्म में आकाश पर अन्तर है और एक पृथ्वी पर। पृथ्वी के अन्तर से अभिप्राय वह अन्तर है जो मनुष्य की बुद्धि और उसकी अन्तर्आत्मा तथा इस संसार का प्रकृति का कानून उसकी व्याख्या करता है। अत: ईसाई धर्म और इस्लाम को जब इस कसौटी के अनुसार जांचा जाए तो स्पष्ट सिद्ध होता है कि इस्लाम वह स्वाभाविक धर्म है जिसके सिद्धान्तों में कोई बनावट और तकल्लुफ़ नहीं और जिसके आदेश नए बनाये हुए तथा बनावटी बात नहीं और कोई ऐसी बात नहीं जो ज़बरदस्ती स्वीकार करानी पड़े और जैसा कि ख़ुदा तआला ने जगह-जगह स्वयं फ़रमाया है पवित्र क़ुर्आन प्रकृति के ग्रन्थ के समस्त ज्ञानों और उसकी सच्चाइयों को स्मरण कराता और इसके विपरीत कोई नई बातें पेश नहीं करता अपितु वास्तव में उसी के बारीक अध्यात्म ज्ञान प्रकट करता है इसके विपरीत ईसाइयों की शिक्षा जिसका इंजील पर हवाला दिया जाता है एक नया ख़ुदा प्रस्तुत कर रही है जिसकी आत्महत्या पर दुनिया के गुनाह और अज़ाब से मुक्ति निर्भर और उसके दु:ख उठाने पर जनता का आराम निर्भर और उसके अपमानित और तिरस्कृत होने पर जनता का सम्मान निर्भर समझा गया है। फिर वर्णन किया गया है कि वह ऐसा विचित्र ख़ुदा है कि उसकी आयु का एक भाग शरीर और शरीर के दोषों से पवित्रता में गुज़रा है और आयु का दूसरा भाग (किसी अज्ञात दुर्भाग्य के कारण) हमेशा के लिए शरीर धारण करने और परिवर्तनशीलता में क़ैद हो गया और गोश्त पोस्त हड्डियाँ

इत्यादि सब के सब उसकी रूह के लिए अनिवार्य हो गए और इस साक्षात् शरीर के कारण अब हमेशा उसके साथ रहेगा, उसको नाना प्रकार के दु:ख उठाने पड़े अन्त में दुखों के प्रभुत्व से मर गया और फिर ज़िन्दा हुआ और फिर उसी शरीर ने फिर आकर उसको पकड़ लिया और अनश्वर तौर पर उसे पकड़े रहेगा। कभी छुटकारा नहीं होगा। अब देखो कि क्या कोई सही प्रकृति इस आस्था को स्वीकार कर सकती है? क्या कोई पवित्र अन्तर्आत्मा इसकी साक्ष्य दे सकती है? क्या प्रकृति का नियम निर्दोष, बेऐब तथा अपरिवर्तनीय ख़ुदा के एक भाग के लिए ये घटनाएँ और आपदाएं वैध रख सकता है कि उसको हमेशा प्रत्येक संसार के पैदा करने और फिर उसको मुक्ति देने के लिए एक बार मरना अवश्यक है और आत्महत्या के अतिरिक्त अपने किसी भलाई पहुँचाने की विशेषता को प्रकट नहीं कर सकता और न किसी प्रकार का अपनी सृष्टि को दुनिया या आखिरत में आराम पहुंचा सकता है। स्पष्ट है कि यदि ख़ुदा तआला को अपनी दया बन्दों पर उतारने के लिए आत्महत्या की आवश्यकता है तो इस से अनिवार्य आता है कि उसको हमेशा मृत्यु की घटना आती रहे और पहले भी असंख्य मौतों का स्वाद चख चुका हो और दूसरे अनिवार्य आता है कि हिंदुओं के परमेश्वर की तरह विशेषताओं से निलंबित हो। अब स्वयं ही विचार करो कि क्या ऐसा असहाय और थका हुआ ख़ुदा हो सकता है कि जो बिना आत्महत्या के अपनी जनता को कभी तथा किसी युग में कोई भलाई नहीं पहुंचा सकता। क्या यह कमज़ोरी और अशक्ति की हालत सर्वशक्तिमान ख़ुदा के योग्य है? फिर ईसाइयों के ख़ुदा की मौत का परिणाम देखिये तो कुछ भी नहीं। उनके ख़ुदा के प्राण गए परन्तु शैतान

के अस्तित्व और उसके कारखाने का एक बाल भी बीका न हुआ। वही शैतान और वही उसके चेले जो पहले थे अब भी हैं। चोरी, डकैती, व्यभिचार, क़त्ल, झूठ बोलना, मदिरापान,★ द्यूतक्रीड़ा, दुनिया परस्ती, बेईमानी, कुफ्र, शिर्क, नास्तिकता और अन्य सैकड़ो प्रकार के

★**हाशिया :-** ताज़ा अख़बारों से ज्ञात हुआ है कि ब्रिटिश हुकूमत का हर वर्ष तेरह करोड़ सात हज़ार पौंड मदिरा बनाने और मदिरापान में व्यय होता है (और एक संवाददाता एम्. ए. का लेख है) कि मदिरा के कारण लन्दन में आत्महत्या की सैकड़ों घटनाएँ हो जाती हैं और विशेष तौर पर लन्दन में शायद कुल तीस लाख आबादी के दस हज़ार आदमी मदिरापान करने वाले न होंगे, अन्यथा सब पुरुष और स्त्री ख़ुशी और आज़ादी से मदिरा पीते और पिलाते हैं लन्दन वालों का कोई ऐसा जल्सा, सोसायटी और महफ़िल नहीं है कि जिसमें सर्वप्रथम ब्रांडी, शैरी तथा लाल मदिरा का प्रबंध न किया जाता हो। प्रत्येक जल्से का बड़ा भाग मदिरा को ठहरा दिया जाता है और इस पर तुरफ़ा यह कि लन्दन के बड़े-बड़े क़िस्सीस और पादरी लोग भी धार्मिक कहलाने के बावजूद मदिरापान में प्रथम श्रेणी पर होते हैं। जितने जलसों में मुझ को मिस्टर निकलेट साहिब के कारण सम्मिलित होने का संयोग हुआ है उन सब में दो-चार नौजवान पादरी और रेवरेंड भी अवश्य सम्मिलित होते देखे। लन्दन में मदिरापान को किसी बुरी मद में सम्मिलित नहीं समझा गया और यहाँ तक मदिरापान की खुल्लम-खुल्ला गरम बाज़ारी है कि मैंने स्वयं अपनी आँखों से लन्दन की सैर के शोर-शराबे में अधिकतर अंग्रेज़ों को बाज़ार में फिरते देखा कि मतवाले हो रहे हैं और हाथ में मदिरा की बोतल है। इसी प्रकार में लन्दन में स्त्रियाँ देखी जाती हैं कि हाथ में बियर की बोतल लिए लडखड़ाती चली जाती हैं। बीसियों लोग शराब के नशे में चूर और मतवाले, अच्छे भले, भले मानुष सभ्य बाज़ारों की नालियों में गिरे हुए देखे। मदिरापान के कारण और बरकत से लन्दन में आत्महत्या की इतनी घटनाएँ होती रहती हैं कि प्रतिवर्ष उनकी एक घातक वबा

अपराध जो मसीह के मस्लूब होने से पूर्व थे अब भी उसी ज़ोर और शोर में हैं अपितु कुछ बढ़-चढ़ कर। उदाहरणतया देखिये कि उस युग में कि जब अभी मसीहियों का ख़ुदा जीवित था ईसाइयों की हालत अच्छी थी ज्यों ही उस ख़ुदा पर मौत आई जिसको कफ़्फ़ारा कहा

शेष हाशिया - पड़ती है (एक फ़रवरी 1883 रहबर हिन्द लाहौर)

इसी प्रकार एक साहिब ने लन्दन का सामान्य व्यभिचार और सत्तर-सत्तर हज़ार के लगभग प्रतिवर्ष हरामी बच्चे पैदा होना वर्णन कर के उन लोगों की निर्लज्जता की वे बातें लिखी जाती हैं जिनके विवरण से कलम रुकता है। कुछ ने यह भी लिखा है कि यूरोप के प्रथम श्रेणी के सभ्य और शिक्षित लोगों के यदि दस भाग किए जाएँ तो निस्सन्देह नौ भाग उनमें से नास्तिक होंगे जो धर्म की पाबन्दी और ख़ुदा तआला के इक़रार तथा प्रतिफल एवं दण्ड की आस्था से निवृत हो बैठे हैं और नास्तिकता का यह रोग दिन-प्रतिदिन यूरोप में बढ़ता जाता है तथा मालूम होता है कि बर्तानवी हुकूमत की हार्दिक उदारता ने इसकी उन्नति से कुछ भी घृणा नहीं की। यहाँ तक कि कुछ पक्के नास्तिक पार्लियामेंट की कुर्सी पर भी बैठ गए और कुछ परवाह न की। न मुहरम लोगों को नौजवान स्त्रियों का चुम्बन लेना केवल वैध ही नहीं अपितु यूरोप की नवीन सभ्यता में एक उत्तम बात क़रार ठहरा दिया गया है। कोई दावे से नहीं कह सकता कि इंग्लेंड में कोई ऐसी औरत भी है कि जिसका ठीक जवानी के दिनों में किसी न मुहरम जवान ने चुम्बन न लिया हो। दुनिया परस्ती इतनी है कि आरोप इलेक्ज़ेन्डर साहिब अपने एक पत्र में (जो मेरे नाम भेजा है) लिखते हैं कि समस्त सभ्य और शिक्षित लोग जो इस देश में पाए जाते हैं उनमें से मेरी नज़र में एक भी ऐसा नहीं जिसकी निगाह आख़िरत की ओर लगी हुई हो अपितु समस्त लोग सर से पैर तक दुनिया परस्ती में ग्रस्त दिखाई देते हैं। अब इन तमाम वर्णनों से प्रकट है कि मसीह के कुर्बान होने के वे प्रभाव जो पादरी लोग हिंदुस्तान में आकर सीधे-सादे लोगों का सुनाते हैं पादरी लोगों का सर्वथा

जाता है तभी से विचित्र तौर पर शैतान इस क़ौम पर सवार हो गया और गुनाह, अवज्ञ और नफ़्स परस्ती के हज़ारों दरवाज़े खुल गए। अत: ईसाई लोग स्वयं इस बात के क़ाइल हैं और पादरी फंडर साहिब लेखक "मीज़ानुल हक़" कहते हैं कि ईसाइयों के गुनाहों की प्रचुरता, उनकी आन्तरिक बदचलनी और पाप तथा अश्लीलता के फैलने के कारण ही मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईसाइयों को दण्ड देने और चेतावनी देने के उद्देश्य से भेजे गए थे। अत: इन वर्णनों से स्पष्ट है कि अधिकतर गुनाहों और पाप का तूफ़ान मसीह के मस्लूब होने के बाद ही ईसाइयों में उठा है। इस से सिद्ध है कि मसीह का मरना इस उद्देश्य से नहीं था कि गुनाह की तेज़ी उसकी मृत्यु से कुछ कमी की तरफ़ हो जाएगी उदाहरणतया उसके मरने से पूर्व

शेष हाशिया - गढ़ा हुआ झूठ है और असल वास्तविकता यही है कि कफ़्फ़ारे के विषय को स्वीकार करके ईसाइयों की तबीयतों ने जिस ओर पलटा खाया है वह यही है कि मदिरापान प्रचुरता से फैल गया। व्यभिचार और बुरी नज़र से देखना माँ का दूध समझा गया। द्यूतक्रीड़ा (जुएबाज़ी) की अत्यधिक उन्नति हो गई। सच्चे दिल से ख़ुदा तआला की इबादत करना और पूर्णतया सत्य की ओर हो जाना यह सब बातें स्थगित हो गई। हाँ व्यवस्थित सभ्यता यूरोप में निस्सन्देह पाई जाती है अर्थात् परस्पर सहमति के विरुद्ध जो गुनाह हैं जैसे चोरी, क़त्ल और बलात्कार इत्यादि जिनके करने से शाही कानूनों ने देश के हित के कारण रोक दिया है उनका रोकना निस्सन्देह है परन्तु ऐसे गुनाहों के रोकने का यह कारण नहीं कि मसीह के कफ़्फ़ारे का प्रभाव हुआ है अपितु कानूनों की रोक और सोसायटी के दबाव ने यह प्रभाव डाला हुआ है यदि यह अवरोधक मध्य में न हों तो मसीही लोग सब कुछ कर गुज़रें और फिर यह अपराध भी तो अन्य देशों की तरह यूरोप में होते ही रहते हैं पूर्णतया रोक तो नहीं। इसी से।

यदि लोग बहुत शराब पीते थे या यदि अत्यधिक व्यभिचार करते थे अथवा यदि पक्के दुनियादार थे तो मसीह के मरने के पश्चात यह प्रत्येक प्रकार के गुनाह दूर हो जायेंगे क्योंकि यह बात सबूत से निस्पृह है कि जितना अब मदिरापान, दुनिया परस्ती और व्यभिचार विशेष तौर पर यूरोप के देशों में उन्नति पर है कोई दक्ष व्यक्ति कदापि नहीं सोच सकता कि मसीह की मृत्यु से पहले यही तूफ़ान पाप और अश्लीलता का मचा हुआ था अपितु उसका हज़ारवाँ भाग भी सिद्ध नहीं हो सकता तथा इन्जीलों पर विचार कर के पूर्ण सफ़ाई से खुल जाता है कि मसीह को कदापि स्वीकार न था कि यहूदियों के हाथ में पकड़ा जाए और मारा जाए और सलीब पर खींचा जाए क्योंकि यदि यही स्वीकार होता तो पूरी रात इस बला के दूर होने के लिए क्यों रोता रहता और रो-रो कर क्यों यह दुआ करता कि हे अब्बा! हे बाप!! तुझ से सब कुछ हो सकता है यह प्याला मुझ से टाल दे अपितु सच यही है कि मसीह अपनी इच्छा के अकस्मात तौर पर पकड़ा गया और उस ने मरते समय तक रो-रो कर यही दुआ की है कि हे मेरे ख़ुदा! हे मेरे ख़ुदा! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया। इस से स्पष्टता के साथ सिद्ध होता है कि मसीह ज़िन्दा रहना तथा कुछ और दिन दुनिया में ठहरना चाहता था और उसकी रूह अत्यन्त बेचैनी से तड़प रही थी कि किसी प्रकार उसके प्राण बच जाएँ परन्तु उसकी इच्छा के बिना यह सफ़र उसके सामने आ गया था। दूसरे यह भी विचार करने का स्थान है कि क़ौम के लिए इस तरीके पर मरने से जैसा ईसाइयों ने प्रस्तावित किया है मसीह को क्या प्राप्त था और क़ौम को इस से क्या लाभ? यदि वह जीवित रहता तो अपनी क़ौम में बड़े-बड़े

सुधार करता बड़े-बड़े दोष उनसे दूर कर के दिखाता, परन्तु उसकी मृत्यु ने क्या कर के दिखाया इसके अतिरिक्त कि कुसमय मरने से सैकड़ो फ़ित्ने पैदा हुए और ऐसी खराबियां प्रकटन में आईं जिनके कारण एक संसार तबाह हो गया। यह सच है कि जवां मर्द लोग क़ौम की भलाई के लिए अपने प्राण भी न्योछावर कर देते हैं या क़ौम के बचाव के लिए प्राणों को मौत के स्थान में डालते हैं परन्तु न ऐसे व्यर्थ और निरर्थक तौर पर जो मसीह के बारे में वर्णन किया जाता है अपितु जो व्यक्ति बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से क़ौम के लिए प्राण देता है या प्राणों को मृत्यु के स्थान पर डालता है वह तो बुद्धिसंगत, प्रिय, काम आने वाले, स्पष्ट लाभप्रद तरीकों में से कोई ऐसा उच्चतम और स्पष्ट सर्वाधिक न्योछावर होने का लाभप्रद तरीका ग्रहण करता है जिस तरीके के इस्तेमाल से यद्यपि उसको कष्ट पहुँच जाए या प्राण ही जाए परन्तु उसकी क़ौम कुछ विपत्तियों से वास्तविक तौर पर बच जाए यह तो नहीं कि फांसी लेकर या ज़हर खाकर या किसी कुएं में गिरने से आत्महत्या कर ले और फिर यह समझे कि मेरी आत्महत्या क़ौम के लिए भलाई का कारण होगी। ऐसी हरकत तो पाग़लों का काम हैं न कि बुद्धिमान धार्मिक लोगों का, अपितु यह मृत्यु अवैध मृत्यु है और निपट मूर्ख और सीधे सादे लोगों के अतिरिक्त कोई इसका इरादा नहीं करता। मैं सच कहता हूँ कि कामिल और दृढ़प्रतिज्ञ आदमी का मरना उस विशेष हालत के अतिरिक्त बहुतों के बचाव के लिए उचित और प्रसिद्ध तरीके पर मरना ही पड़े क़ौम के लिए अच्छा नहीं अपितु बड़े संकट और शोक का स्थान है तथा ऐसा व्यक्ति जिसके अस्तित्व से ख़ुदा की प्रजा को भिन्न-भिन्न प्रकार का लाभ पहुँच रहा है यदि

आत्महत्या का इरादा करे तो वह ख़ुदा तआला का बहुत पापी है और उसका गुनाह दूसरे ऐसे अपराधियों की अपेक्षा अधिक है। अतः प्रत्येक कामिल के लिए अनिवार्य है कि अपने लिए ख़ुदा तआला के दरबार से लम्बी आयु मांगे ताकि वह ख़ुदा की मख़्लूक़ के लिए उन समस्त कार्यों को भली-भाँति पूरा कर सके जिनके लिए उसके दिल में जोश डाला गया है। हाँ! दुष्ट आदमी का मरना उसके लिए दूसरे ख़ुदा की मख़्लूक़ के लिए अच्छा है ताकि बुराइयों का भण्डार अधिक न होता जाए और ख़ुदा की मख़्लूक़ उसके प्रतिदिन फ़ित्ने से तबाह न हो जाए। यदि यह प्रश्न किया जाए कि समस्त पैग़म्बरों में से क़ौम के बचाव के लिए तथा ख़ुदाई प्रताप की अभिव्यक्ति के उद्देश्य से उचित तरीकों के साथ और आवश्यक हालातों के समय में किसी पैग़म्बर ने अधिकतर स्वयं को मौत के स्थान में डाला और क़ौम पर स्वयं को न्योछावर करना चाहा। क्या मसीह या किसी और नबी या हमारे सय्यद-व-मौला मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने। तो इसका उत्तर जोश और रोशन तर्कों, स्पष्ट आयतों तथा ऐतिहासिक सबूत से मेरे सीने में भरा हुआ है मैं अफ़सोस के साथ उसका लिखना छोड़ देता हूँ कि वह बहुत लम्बा है यह थोड़ा सा निबंध उसको सहन नहीं कर सकता। इंशाअल्लाह यदि आयु ने वफ़ा की तो भविष्य में एक स्थायी पुस्तक इस बारे में लिखूंगा परन्तु यहाँ संक्षिप्त तौर पर खुशख़बरी देता हूँ कि वह पूर्ण व्यक्ति जो क़ौम पर और समस्त मानव जाति पर अपने नफ़्स को क़ुर्बान करने वाला है वह हमारे नबी करीम हैं अर्थात्

سیّدنا و مولانا و وحیدنا و فریدنا احمد مجتبٰی محمد مصطفٰی الرسول النبی الاُمّی العربی القرشی صلی اللہ علیہ وسلم۔

यहाँ मैंने सच्चे और झूठे धर्म के अन्तर के लिए वह अन्तर जो पृथ्वी पर मौजूद है अर्थात् जो बातें जिनका बुद्धि और अन्तर्आत्मा के द्वारा निर्णय हो सकता है कुछ लिख दिया है परन्तु जो अन्तर आकाश के द्वारा खुलता है वह भी ऐसा आवश्यक है कि उसके अतिरक्त सत्य और असत्य में अन्तर स्पष्ट नहीं हो सकता और वह यह है कि सच्चे धर्म के अनुयायियों के साथ ख़ुदा तआला का एक विशेष सम्बन्ध हो जाते हैं और वह पूर्ण अनुयायी अपने अनुकरणीय नबी का द्योतक और उसकी रूहानी परिस्थितियों तथा आन्तरिक बरकतों का एक नमूना हो जाता है। और जिस प्रकार बेटे के मध्यवर्ती अस्तित्व के कारण पोता भी बेटा ही कहलाता है इसी प्रकार जो व्यक्ति नबी के अनुकरण की छाया के नीचे पोषण प्राप्त है उसके साथ भी वही कृपा और उपकार होता है जो नबी के साथ होता है और जैसे नबी को निशान दिखाए जाते हैं ऐसा ही उसका विशेष तौर पर अध्यात्म ज्ञान बढ़ाने के लिए उसको भी निशान मिलते हैं। अतः ऐसे लोग उस धर्म की सच्चाई के लिए जिसके समर्थन के लिए वह प्रकट होते हैं जीवित निशान होते हैं। ख़ुदा तआला आकाश से उनकी सहायता करता है और प्रचुरता से उनकी दुआएं स्वीकार करता है और स्वीकृति की सूचना प्रदान करता है। उन पर संकट भी उतरते हैं परन्तु इसलिए नहीं उतरतीं कि उन्हें तबाह करें अपितु इसलिए कि अन्त में उनकी विशेष सहायता से क़ुदरत के निशान प्रकट किए जाएँ। वे अपमान के पश्चात् पुनः सम्मान पा लेते हैं और मरने के बाद फिर ज़िन्दा हो जाया करते हैं ताकि ख़ुदा तआला के विशेष कार्य उनमें प्रकट हों।

यहाँ यह नुक्त: स्मरण रखने योग्य है कि दुआ का स्वीकार होना दो प्रकार से होता है। एक बतौर इब्तिला (परीक्षा) और एक बतौर इस्तिफ़ा (प्रतिष्ठा)। बतौर इब्तिला तो कभी-कभी पापियों और अवज्ञाकारियों अपितु काफिरों की दुआ भी स्वीकार हो जाती है परन्तु ऐसा स्वीकार होना वास्तविक स्वीकारिता को सिद्ध नहीं करता अपितु नास्तिकों की ओर से चमत्कार दिखाना और परीक्षा के वर्ग से होता है परन्तु जो बतौर इस्तिफ़ा दुआ स्वीकार होती है उसमें यह शर्त है कि दुआ करने वाला ख़ुदा तआला के चुने हुए बन्दों में से हो और चारों ओर से चुने हुए प्रकाश और लक्षण उसमें प्रकट हों, क्योंकि ख़ुदा तआला वास्तविक स्वीकारिता के तौर पर अवज्ञाकारियों की दुआ कदापि नहीं सुनता अपितु उन्हीं की सुनता है जो उसकी दृष्टि में ईमानदार और उसके आदेश पर चलने वाले हों। अत: इब्तिला और इस्तिफ़ा की दुआ की स्वीकारिता में परस्पर अन्तर यह है कि जो इब्तिला के तौर पर दुआ स्वीकार होती है उसमें संयमी और ख़ुदा का दोस्त होना शर्त नहीं और न उसमें यह आवश्यकता है कि ख़ुदा तआला दुआ को स्वीकार करके अपने विशेष वार्तालाप के द्वारा उसकी स्वीकारिता से सूचना भी दे और न वे दुआएं ऐसी उच्चतम श्रेणी की होती हैं जिनका स्वीकार होना एक विचित्र और विलक्षण बात समझी जा सके परन्तु जो दुआएं इस्तिफ़ा के कारण स्वीकार होती हैं उनमें ये निशान स्पष्ट होते हैं:-

(1) प्रथम यह कि दुआ करने वाला एक संयमी, ईमानदार और कामिल मनुष्य होता है।

(2) दूसरे यह कि ख़ुदा तआला के वार्तालाप के माध्यम से उस दुआ की स्वीकृति की उसको सूचना दी जाती है।

(3) तीसरी यह कि अधिकतर वे दुआएं जो स्वीकार की जाती हैं अत्यन्त उच्चतम श्रेणी की तथा पेचीदा कामों के बारे में होती हैं जिनके स्वीकार होने से खुल जाता है कि यह मनुष्य का काम और यत्न नहीं अपितु ख़ुदा तआला की क़ुदरत का एक विशेष नमूना है जो विशेष बन्दों पर प्रकट होता है।

(4) चौथी यह कि इब्तिलाई दुआएं तो कभी-कभी बहुत कमी के तौर पर स्वीकार होती हैं परन्तु इस्तिफ़ाई दुआएं प्रचुरता से स्वीकार होती हैं कभी इस्तिफ़ाई दुआ वाला ऐसी बड़ी-बड़ी कठिनाइयों में फँस जाता है कि यदि अन्य व्यक्ति उनमें ग्रस्त हो जाता तो आत्महत्या के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय अपने प्राण बचाने के लिए उसे कदापि दिखाई न देता। अतः ऐसा होता भी है कि जब कभी दुनिया परस्त लोग जो ख़ुदा तआला से पृथक और दूर हैं कुछ बड़े-बड़े शोक, ग़मों, रोगों, बीमारियों और हल न होने वाली बलाओं में ग्रस्त हो जाते हैं तो वे अन्ततः ईमान की कमज़ोरी के कारण ख़ुदा तआला से निराश होकर किसी प्रकार का ज़हर खा लेते हैं या कुएं में गिरते हैं या बंदूक इत्यादि से आत्महत्या कर लेते हैं परन्तु ऐसे नाज़ुक समयों में इस्तिफ़ा वाले व्यक्ति को अपनी ईमानी शक्ति और ख़ुदा तआला से विशेष संबंध अपनी कुव्वत-ए-ईमानी के कारण तथा ख़ुदा तआला से विशेष संबंध की ओर से अत्यन्त विचित्र से विचित्र सहायता दिया जाता है और ख़ुदा तआला की अनुकम्पा एक अद्भुत तौर से उसका हाथ पकड़ लेती है, यहाँ तक कि एक मुहरम-ए-राज़ (भेदों को जानने वाले) का दिल सहसा बोल उठता है कि यह मनुष्य अल्लाह तआला से समर्थित है।

(5) पांचवे यह कि इस्तिफ़ाई दुआ का व्यक्ति ख़ुदा तआला

की अनुकम्पाओं का स्थान होता है और ख़ुदा तआला समस्त कामों में उसका प्रतिपालक हो जाता है और ख़ुदा तआला के इश्क का प्रकाश और मान्यतापूर्ण प्रतिष्ठा की मस्ती और रूहानी आनन्द प्राप्ति और नेमतों के लक्षण उसके चेहरे में स्पष्ट होते हैं जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है

تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ۝

(अलमुतफ़्फ़िफ़ीन - 25)

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَاءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

(यूनुस - 63 से 65)

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ۝

(हा मीम अस्सज्द: - 31,32)

وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ۝ ★

(अलबक़र: - 187)

★**हाशिया :-** सावधान हो अर्थात् निस्सन्देह समझ ले कि जो लोग अल्लाह

अब जानना चाहिए कि प्रिय होना, स्वीकारिता और सच्ची विलायत की श्रेणी जिसके संक्षिप्त तौर पर कुछ निशान वर्णन कर चुका हूँ। ये आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुकरण के

शेष हाशिया - (जल्ला शानुहू) के दोस्त हैं अर्थात् जो लोग ख़ुदा तआला से सच्चा प्रेम रखते हैं और ख़ुदा तआला उनसे प्रेम रखता है तो उनकी यह निशानियाँ है कि न उन पर भय का प्रभुत्त्व होता है कि क्या खाएंगे या क्या पियेंगे या अमुक बला से क्योंकर मुक्ति होगी क्योंकि वे तसल्ली दिए जाते हैं और न गुज़रे हुए के बारे में उन्हें कोई ग़म और शोक होता है क्योंकि वे सब्र दिए जाते हैं। दूसरी निशानी यह है कि वे ईमान रखते हैं अर्थात् ईमान में पूर्ण होते हैं और संयम धारण करते हैं अर्थात् ईमान के विरुद्ध और आज्ञाकारी होने के विरुद्ध जो बातें हैं उनसे बहुत दूर रहते हैं। तीसरी उनकी यह निशानी है कि उन्हें (ख़ुदा तआला के वार्तालाप तथा सच्चे स्वप्नों द्वारा खुशखबरियां मिलती रहती हैं) इस संसार में भी और दूसरे संसार (परलोक) में भी ख़ुदा तआला का उनके बारे में यह अहद है जो टल नहीं सकता और यही प्रिय श्रेणी है जो उन्हें मिली हुई है अर्थात् ख़ुदा तआला के वार्तालाप तथा सच्चे स्वप्नों से ख़ुदा तआला के विशेष बन्दों को जो उसके वली हैं अवश्य हिस्सा मिलता है और उनके वली होने का भारी निशान यही है कि ख़ुदा तआला के वार्तालाप और सम्बोधनों से सम्मानित हों (अल्लाह तआला की प्रकृति का यही नियम है) जो लोग विभिन्न प्रतिपालकों से विमुख होकर अल्लाह जल्ला शानुहू को अपना प्रतिपालक समझ लें और कहें कि हमारा तो एक अल्लाह ही प्रतिपालक है (अर्थात् अन्य किसी प्रतिपालक पर हमारी दृष्टि नहीं) और फिर आज़मायशों के समय क़ायम रहें (कैसे ही ज़लज़ले आएं, आंधियां चलें, अन्धकार फैलें उनमें थोड़ी सी भी डगमगाहट, परिवर्तन और व्याकुलता पैदा न हो पूरी-पूरी दृढ़ता पर रहें) तो उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं (अर्थात् इल्हाम या सच्चे स्वप्न के माध्यम से उन्हें खुशखबरियां मिलती हैं) कि दुनिया और आख़िरत में हम तुम्हारे

बिना कदापि प्राप्त नहीं हो सकता और सच्चे अनुयायी के मुकाबले पर यदि कोई ईसाई या आर्य या यहूदी स्वीकारिता के लक्षण और प्रकाश दिखाना चाहे तो यह उसके लिए कदापि संभव न होगा और

शेष हाशिया - दोस्त और अभिभावक और प्रतिपालक हैं और आख़िरत में जो कुछ तुम्हारे जी चाहेंगे वह सब तुम्हें मिलेगा। अर्थात् यदि दुनिया में कुछ अप्रिय बातें भी सामने आएं तो कोई भय की बात नहीं क्योंकि आखिरत में समस्त ग़म दूर हो जायेंगे और सब मनोकामनायें पूर्ण होंगी। यदि कोई कहे कि यह क्योंकर हो सकता है कि आख़िरत में जो कुछ इन्सान का नफ़्स चाहे उसको, मिले मैं कहता हूँ कि यह होना अत्यावश्यक है और इसी बात का नाम मुक्ति है अन्यथा अगर मनुष्य मुक्ति पाकर कुछ वस्तुओं को चाहता रहा और उनके ग़म में जलता रहा परन्तु वे वस्तुएं उनको न मिलीं तो फिर मुक्ति किस बात की हुई एक प्रकार का अज़ाब तो साथ ही रहा। इसलिए आवश्यक है कि स्वर्ग या नर्क या मुक्ति गृह या स्वर्ग जो नाम उस स्थान का रखा जाए जो अत्यन्त सौभाग्य पाने का घर है वह ऐसा घर होना चाहिए कि मनुष्य को उसमें हर प्रकार से सर्वथा प्रसन्नता प्राप्त हो तथा कोई बाह्य या आन्तरिक रंज की बात मध्य में न हो और किसी असफलता की जलन का हृदय पर प्रभुत्व न हो। हाँ यह बात सत्य है कि स्वर्ग में अयोग्य और अनुचित बातें नहीं होंगी परन्तु पवित्र हृदयों में उनकी इच्छा भी पैदा न होगी अपितु उन पवित्र और शुद्ध हृदयों में जो शैतानी विचारों से पवित्र किए गए हैं मनुष्य की पवित्र प्रकृति और स्रष्टा की पवित्र इच्छा के अनुसार पवित्र इच्छाएं पैदा होंगी ताकि मनुष्य अपनी बाह्य और आन्तरिक तथा शारीरिक और अध्यात्मिक सौभाग्य को पूरे-पूरे तौर पर पा ले तथा अपनी समस्त शक्तियों के पूर्ण प्रकटन से पूर्ण मनुष्य कहलाये। क्योंकि स्वर्ग में दाख़िल करना इन्सानी नक्श के मिटा देने के उद्देश्य से नहीं जैसा कि हमारे विरोधी ईसाई और आर्य समझते हैं अपितु इस उद्देश्य से है ताकि मानवीय प्रकृति के नक्श बाह्य और आन्तरिक तौर पर पूर्ण रूप से चमकें

परीक्षा का अत्यन्त साफ़ तरीका यह है कि यदि एक नेक मुसलमान के मुकाबले पर जो सच्चा मुसलमान और सच्चाई से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुयायी हो कोई दूसरा व्यक्ति ईसाई इत्यादि मुकाबले के लिए खड़ा हो और यह कहे की तुझ पर आकाश से जो कुछ निशान प्रकट होगा ये जितने ग़ैबी रहस्य तुझ पर खुलेंगे, या जो कुछ दुआ की स्वीकारिता से तुझ को सहायता दी जाएगी, या जिस प्रकार से तेरा सम्मान और प्रतिष्ठा की अभिव्यक्ति के लिए क़ुदरत का कोई नमूना प्रकट किया जायेगा, या यदि विशेष इनामों का बतौर भविष्यवाणी तुझे वादा दिया जायेगा अथवा तेरे किसी दुष्ट विरोधी पर किसी चेतावनी के उतरने की खबर दी जाएगी

और समस्त असंतुलन दूर हो कर ठीक-ठीक वे बातें प्रकट हो जाएँ जो मनुष्य के लिए उसकी बाह्य और आन्तरिक बनावट के लिए आवश्यक हैं।

फिर फ़रमाया कि जब मेरे विशेष बन्दे (जो चुने हुए हैं) मेरे बारे में प्रश्न करने और पूछें कि कहाँ है तो उन्हें मालूम हो कि मैं बहुत ही करीब हूँ। ऐसे निष्कपट बन्दों की दुआ सुनता हूँ जब भी कोई निष्कपट बन्दा दुआ करता है (चाहे दिल से या जीभ से) सुन लेता हूँ (अत: इस से सानिध्य प्रकट है) परन्तु चाहिए कि वे ऐसी अपनी हालत बनाये रखें जिस से मैं उनकी दुआ सुन लिया करूँ। अर्थात् मनुष्य अपना पर्दा स्वयं हो जाता है। जब पवित्र हालात को छोड़कर दूर जा पड़ता है तब ख़ुदा तआला भी उस से दूर हो जाता है और चाहिए कि अपना ईमान मुझ पर क़ायम रखें (क्योंकि ईमानी शक्ति की बरकत से दुआ शीघ्र स्वीकार होती है) यदि वह ऐसा करें तो भलाई प्राप्त कर लेंगे अर्थात् ख़ुदा तआला हमेशा उनके साथ होगा। और कभी अनुकम्पा और ख़ुदा का मार्गदर्शन उनसे पृथक नहीं होगा। अत: दुआ का स्वीकार होना भी ख़ुदा के वलियों के लिए एक भारी निशान है। अत: विचार कर। इसी से।

तो इन सब बातों में जो कुछ तुझ से प्रकटन में आएगा और जो कुछ तू दिखायेगा वह मैं भी दिखाऊंगा। तो ऐसा मुकाबला किसी विरोधी से कदापि संभव नहीं और कदापि मुकाबले पर नहीं आएंगे क्योंकि उनके हृदय गवाही दे रहे हैं कि वे महाझूठे हैं। उन्हें उस सच्चे ख़ुदा से कुछ भी संबंध नहीं कि जो ईमानदारों का सहायक और सिद्दीकों का दोस्त है जैसा कि हम पहले भी कुछ वर्णन कर चुके हैं -।

وَهٰذَا اٰخِرُ كَلَامِنَا وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ اَوَّلًا وَّ اٰخِرًا وَّ ظَاهِرًا وَّ بَاطِنًا
هُوَ مَوْلَانَا نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ الْوَكِيْل